Curriculum and Credit Framework
As per NEP 2020

For
U G SANSKRIT - POOL COURSE

(To be effective from the Academic Session 2026)

Department of Indian knowledge and language
Gurugram University, Gurugram

(A State Govt. University Established Under Haryana Act 17 Of 2017)

UG Sanskrit Pool
Page NO - 1-62
Multidisciplinary
Page NO - 1-29

Semester 1

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
MDC-1	श्रीमद्भगवद्गीता	240/SKT/ MD101	2	1		2	1		3	25	50			75
AEC-1	संस्कृत भाषा एवं सम्प्रेषण-1	240/SKT/ AE101	1	1		1	1		2	15	35			50
MIC-1	संस्कृत साहित्य में राष्ट्रवाद:	240/SKT/ MI101	1	1		1	1		2	15	35			50
SEC-1	संस्कृत साहित्य में योग एवं ध्यान	240/SKT/ SE101	2		1	2		1	3	15	35	05	20	75
VAC-1	भारतीय ज्ञान परंपरा: शिक्षा एवं संस्कृति का स्वरूप	240/SKT/ VA101	1	1		1	1		2	15	35	-	-	50

Semester 2

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
MDC-2	नीति साहित्य	240/SKT/ MD202	2	1		2	1		3	25	50			75
AEC-2	संस्कृत भाषा एवं सम्प्रेषण-2	240/SKT/ AE202	1	1		1	1		2	15	35			50
MIC-2	संस्कृत साहित्य में नाट्य एवं रंगमंच	240/SKT/ MI202	1	1		1	1		2	15	35			50
SEC-2	वैदिक आचार एवं उपासना पद्धति	240/SKT/ SE202	2		1	2		1	3	15	35	05	20	75
VAC-2	विदुरनीति	240/SKT/ VA202	1	1		1	1		2	15	35			50

Semester 3

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
MDC-3	वैदिक दर्शन	NEW	2	1		2	1		3	25	50			75
AEC-3	संस्कृत भाषा एवं सम्प्रेषण-3	240/SKT/ AE303	1	1		1	1		2	15	35			50
MIC-3	रामायण	240/SKT/ MI203	3	1		3	1		4	30	70			100

Semester 4

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
AEC-4	संस्कृत भाषा एवं सम्प्रेषण-4	240/SKT/ AE404	1	1		1	1		2	15	35	-	-	50
MIC-4	वैदिक यज्ञ पद्धति	NEW	3	1		3	1		4	30	70	-	-	100
VOC-4	आयुर्विज्ञान	NEW	3	1		3	1		4	30	70	-	-	100
VAC-3	चाणक्य नीति	240/SKT/ VA303	1	1		1	1		2	15	35	-	-	50

Semester 5

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
MIC-5	पुराण साहित्य	New	3	1		3	1		4	30	70	-	-	100
VOC-5	ज्योतिष का मूलभूत ज्ञान	NEW	3	1		3	1		4	30	70	-	-	100
Internship*		NEW							4	30	70			100

SEMESTER – 6

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
MIC-6	भारतीय सामाजिक संस्थान और राज्य व्यवस्था	New	3	1		3	1		4	30	70	-	-	100
MIC-7	लौकिक संस्कृत साहित्य (नाटक)	New	3	1		3	1		4	30	70	-	-	100
VOC-6	लेखन कौशल एवं संस्कृत पत्रकारिता	Revised	**3**	**1**		**3**	**1**		**4**	**30**	**70**			**100**
SEC-3	संस्कृत भाषा में उच्चारण प्रक्रिया एवं कंप्यूटर का प्रयोग	Revised	2		1	2		1	3	15	35	05	20	75

U G SANSKRIT POOL

Semester 1

MDC

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
MDC-1	श्रीमद्भगवद्गीता	240/SKT/ MD101	2	1	-	2	1	-	3	25	50	-	-	75

पाठ्यक्रम विवरण

यह पाठ्यक्रम भारतीय दार्शनिक परंपरा के अत्यंत महत्वपूर्ण ग्रंथ श्रीमद्भगवद्गीता के गूढ़ दार्शनिक पक्षों के अध्ययन पर आधारित है। गीता, जो महाभारत के भीष्मपर्व का एक महत्वपूर्ण अंश है, में जीवन, धर्म, कर्म, ज्ञान, भक्ति और मोक्ष जैसे गहन विषयों का समन्वित विवेचन मिलता है। इस पाठ्यक्रम में विशेष रूप से कृष्ण और अर्जुन के मध्य संवाद के माध्यम से प्रस्तुत दार्शनिक सिद्धांतों–जैसे आत्मा की शाश्वतता, शरीर की नश्वरता, निष्काम कर्म, समत्व योग, तथा ज्ञान और भक्ति के समन्वय–का गहन अध्ययन कराया जाएगा। पाठ्यक्रम का उद्देश्य केवल श्लोकों का भाषिक अध्ययन नहीं है, बल्कि उनके अंतर्निहित दार्शनिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक अर्थों को समझना भी है। इसमें विद्यार्थियों को सांख्य, योग और वेदान्त के मूल सिद्धांतों के संदर्भ में गीता के विचारों का विश्लेषण करने के लिए प्रेरित किया जाएगा।

अधिगम उद्देश्य :-

- गीता के गूढ़ दार्शनिक सिद्धांतों (आत्मा, परमात्मा, कर्म, मोक्ष) से विद्यार्थियों का परिचय
- संवाद के माध्यम से जीवन के नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों को समझाना।
- निष्काम कर्मयोग, ज्ञानयोग और भक्तियोग की अवधारणाओं का स्पष्ट बोध ।
- विद्यार्थियों में कर्तव्यपरायणता एवं नैतिक निर्णय लेने की क्षमता का विकास।

<u>पाठ्यक्रम :</u>

इकाई 1: द्वितीय अध्याय (श्लोक 1-25)

- अर्जुन का विषाद एवं मानसिक द्वंद्व
- कृष्ण द्वारा उपदेश का प्रारंभ
- आत्मा और शरीर का भेद
- आत्मा की नश्वरता से परे शाश्वतता (अविनाशी स्वरूप)

- जीवन एवं मृत्यु का दार्शनिक विवेचन

इकाई 2: द्वितीय अध्याय (श्लोक 26-50)

- कर्म एवं कर्तव्य का सिद्धांत
- निष्काम कर्मयोग का प्रतिपादन
- समत्व योग (सफलता-असफलता में समान भाव)
- बुद्धियोग एवं कर्मफल से अनासक्ति
- कर्तव्यपालन में धैर्य और विवेक

इकाई 3: दार्शनिक अवधारणाएँ

- कर्मयोग का परिचय
- ज्ञानयोग का परिचय
- स्थितप्रज्ञ का परिचय
- भक्तियोग का परिचय
- सांख्ययोग का परिचय

संदर्भ ग्रंथ:

- व्यास. (2018). Shrimad Bhagavad Gita (गीता प्रेस संस्करण). गोरखपुर: Gita Press।
- तिलक, बाल गंगाधर. (2019). गीता रहस्य. पुणे: केसरी प्रकाशन।
- गांधी, मोहनदास करमचंद. (2017). अनासक्ति योग (गीता भाष्य). अहमदाबाद: नवजीवन प्रकाशन।
- राधाकृष्णन, सर्वपल्ली. (2020). भगवद्गीता: टीका एवं व्याख्या. नई दिल्ली: Oxford University Press।
- चिन्मयानंद, स्वामी. (2016). भगवद्गीता (व्याख्या सहित). मुंबई: सेंट्रल चिन्मय मिशन ट्रस्ट।
- प्रभुपाद, ए.सी. भक्तिवेदांत स्वामी. (2015). भगवद्गीता यथारूप. मुंबई: भक्तिवेदांत बुक ट्रस्ट।
- शास्त्री, हरिकृष्ण दास. (2018). श्रीमद्भगवद्गीता: सरल हिंदी व्याख्या. वाराणसी: चौखंबा प्रकाशन।

अधिगम परिणाम

इस पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरांत विद्यार्थी—

- गीता के प्रमुख दार्शनिक सिद्धांतों—आत्मा, कर्म, मोक्ष एवं धर्म—का गहन ज्ञान प्राप्त करेंगे।
- Krishna–Arjuna संवाद के दार्शनिक एवं नैतिक आशयों का विश्लेषण कर सकेंगे।
- निष्काम कर्मयोग, ज्ञानयोग एवं भक्तियोग के सिद्धांतों को समझकर उनका तुलनात्मक अध्ययन कर सकेंगे।
- जीवन की जटिल परिस्थितियों में समत्व एवं धैर्य बनाए रखने में सक्षम होंगे।
- नैतिक मूल्यों, कर्तव्यबोध एवं आत्मानुशासन को अपने जीवन में आत्मसात कर सकेंगे।

- भारतीय दार्शनिक परंपराओं के संदर्भ में गीता के योगदान का मूल्यांकन कर सकेंगे।
- आत्मचिंतन एवं आत्मविकास की दिशा में सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करेंगे।
- आध्यात्मिक एवं व्यावहारिक जीवन के बीच संतुलन स्थापित करने की क्षमता विकसित करेंगे।

दिशा -निर्देश:-

- सभी इकाइयों में से 5 वस्तुनिष्ठ प्रश्न अनिवार्य है - 10 अंक
- इकाई 2 से 4 में से 2श्लोकों की सप्रसंग व्याख्या -12 अंक
- इकाई 3 से 4 में से 2 श्लोक की सप्रसंग व्याख्या - 12 अंक
- इकाई 3 से 4 में से 2 प्रश्नों के उत्तर- 16 अंक

Semester 2
MDC-2

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
MDC-2	नीति साहित्य	240/SKT/ MD202	2	1	-	2	1	-	3	25	50	-	-	75

पाठ्यक्रम विवरण:
यह पाठ्यक्रम भर्तृहरि द्वारा रचित नीतिशतक का गहन अध्ययन प्रदान करता है, जो इसके दार्शनिक अंतर्दृष्टि और श्लोकों में निहित नैतिक शिक्षाओं पर केंद्रित है। पाठ्यक्रम छात्रों को नीति काव्य (नैतिक कविता) के मूल सिद्धांतों, इसकी उत्पत्ति, विकास और प्रमुख विशेषताओं से परिचित कराने के लिए बनाया गया है। छात्र सीखेंगे कि नीति काव्य जीवन के सिद्धांतों का प्रतिबिंब कैसे बनता है, नैतिक आचरण और नैतिक निर्णय लेने का मार्गदर्शन करता है।

अधिगमन उद्देश्य
- नीति साहित्यकारों का गहन अध्ययन
- छात्रों को नीतिशतक के श्लोकों का अध्ययन
- नीति काव्य के माध्यम से छात्रों को जीवन, समाज, और धर्म के नैतिक सिद्धांतों के प्रति जागरूकता ।

इकाई 1: नीतिशतक (श्लोक 1-25)

- मूर्ख निंदा
- विद्या और विद्वता का महत्त्व
- सत्संगति और दुर्जन त्याग
- धैर्य और परोपकार

इकाई 2: नीतिशतक (श्लोक 26-50)
- जीवनोपयोगी नीतियों का विस्तृत अध्ययन
- मित्रता, विद्या, धन, एवं चरित्र से संबंधित विचार
- सामाजिक एवं व्यक्तिगत जीवन में नीति का महत्व
- श्लोकों की व्याख्या, संदर्भ एवं व्यावहारिक उपयोग

इकाई 3:

(क) **सैद्धांतिक अध्ययन**

- अर्थ एवं स्वरूप - नीति काव्य की परिभाषा एवं स्वरूप
- **प्रमुख नीति साहित्यकार-** कामन्द, भर्तृहरि, नारायण पंडित, विष्णु शर्मा

(ख) कंठस्थ श्लोक

- नीतिशतक के चयनित श्लोकों का कंठस्थ अध्ययन
- शुद्ध उच्चारण, भावार्थ एवं व्यावहारिक प्रयोग

संदर्भ ग्रंथ:

1. भर्तृहरि. (2018). Nitishataka (सम्पा. रामचंद्र शास्त्री). वाराणसी: चौखंबा प्रकाशन।
2. पाण्डेय, नारायण. (2016). Hitopadesha. वाराणसी: चौखंबा सुरभारती प्रकाशन।
3. शर्मा, विष्णु. (2015). Panchatantra. दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।
4. कामंदक. (2017). कामंदकीय नीतिसार. दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।
5. द्विवेदी, कपिलदेव. (2019). संस्कृत साहित्य का इतिहास. वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन।
6. मिश्र, श्यामसुंदर. (2020). संस्कृत काव्यशास्त्र के सिद्धांत. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन।

अधिगम परिणाम:

- विद्यार्थी नीतिशतक के श्लोकों का अर्थ एवं भावार्थ समझ सकेंगे
- नीति काव्य की विशेषताओं एवं विकास का विश्लेषण कर सकेंगे
- नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों को अपने जीवन में अपनाने में सक्षम होंगे
- संस्कृत साहित्य के प्रति गहन समझ विकसित करेंगे

दिशा-निर्देश

- सभी इकाइयों में से 5 वस्तुनिष्ठ प्रश्न अनिवार्य होंगे- अंक: 10
- **इकाई 1 से 4** में से 2 श्लोकों की सप्रसंग व्याख्या करें-अंक: 12
- **इकाई 2 से 4** में से 2 श्लोकों की सप्रसंग व्याख्या करें- अंक: 12
- **इकाई 3 से 3** में से 2 टिप्पणियाँ लिखें-कुल अंक: 10
- **इकाई 3** से एक कंठस्थ श्लोक लिखें - अंक: 6

Semester 3
MDC-3

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
MDC-3	**वैदिक दर्शन**	New	2	1		2	1		3	25	50			75

पाठ्यक्रम विवरण

यह पाठ्यक्रम वैदिक एवं उपनिषदिक साहित्य के दार्शनिक सिद्धांतों के गहन अध्ययन पर आधारित है। इसमें ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद के मूल स्वरूप, संरचना एवं सांस्कृतिक महत्त्व का परिचय दिया जाएगा। साथ ही, प्रमुख उपनिषदों: ईशोपनिषद, कठोपनिषद, केनोपनिषद, मुण्डकोपनिषद् –के माध्यम से ब्रह्म, आत्मा, जगत, और मोक्ष जैसे दार्शनिक तत्वों का विश्लेषण किया जाएगा।

यह पाठ्यक्रम केवल पुरातन अध्ययन तक सीमित नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों को वैदिक एवं उपनिषदिक चिंतन को आधुनिक जीवन के संदर्भ में समझने और लागू करने के लिए भी प्रेरित करता है।

पाठ्यक्रम उद्देश्य

- वेद एवं उपनिषदों की मूल अवधारणाओं से विद्यार्थियों को परिचित।
- ब्रह्म, आत्मा, जगत एवं मोक्ष से संबंधित दार्शनिक सिद्धांतों का स्पष्टीकरण।
- वैदिक एवं उपनिषदिक साहित्य की संरचना एवं परंपरा का ज्ञान ।
- भारतीय दर्शन के मूल तत्वों के प्रति जिज्ञासा एवं चिंतनशीलता।
- विद्यार्थियों में नैतिक, आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों का विकास।
- दार्शनिक अवधारणाओं को समकालीन जीवन से जोड़ने की क्षमता का विकास

पाठ्यक्रम

इकाई 1: वेदों का परिचय-1

- वेद का अर्थ, स्वरूप एवं महत्त्व
- चार वेदों का संक्षिप्त परिचय – ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद

इकाई 2: वेदों का परिचय-2

- वेदों की संरचना – संहिता, ब्राहमण, आरण्यक, उपनिषद्
- वैदिक साहित्य का ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्त्व

इकाई 3: उपनिषदों का परिचय

- उपनिषद् का अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप
- प्रमुख उपनिषदों का परिचय – ईशोपनिषद, कठोपनिषद, केनोपनिषद, मुण्डकोपनिषद्,

संदर्भ ग्रंथ:

1. शर्मा, चंद्रधर. (2018). भारतीय दर्शन का इतिहास. दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।
2. राधाकृष्णन, सर्वपल्ली. (2020). भारतीय दर्शन (भाग 1). नई दिल्ली: राजपाल एंड सन्स।
3. ऋग्वेद. (2015). ऋग्वेद संहिता. गोरखपुर: गीता प्रेस।
4. यजुर्वेद. (2016). यजुर्वेद संहिता. गोरखपुर: गीता प्रेस।
5. सामवेद. (2016). सामवेद संहिता. गोरखपुर: गीता प्रेस।
6. अथर्ववेद. (2017). अथर्ववेद संहिता. गोरखपुर: गीता प्रेस।
7. ईशा उपनिषद. (2017). ईशावास्योपनिषद्. गोरखपुर: गीता प्रेस।
8. कठोपनिषद्. (2016). कठोपनिषद्. वाराणसी: चौखंबा प्रकाशन।
9. Mundaka Upanishad. (2015). मुण्डकोपनिषद्. वाराणसी: चौखंबा प्रकाशन।
10. शर्मा, चंद्रधर. (2018). *भारतीय दर्शन का इतिहास.* दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।

अधिगम परिणाम

- विद्यार्थी वेद एवं उपनिषदों की सूक्तियों को समझकर उनका भावार्थ प्रस्तुत कर सकेंगे
- दार्शनिक सिद्धांतों का व्यावहारिक जीवन में उपयोग कर सकेंगे
- भारतीय संस्कृति एवं दर्शन के प्रति गहन समझ विकसित करेंगे

दिशा -निर्देश :

- सभी इकाइयों में से 8 वस्तुनिष्ठ प्रश्न अनिवार्य है -10
- इकाई 1 से 4 में से 3 प्रश्न करें-12
- इकाई 2 से 6 में से 3 प्रश्न करे -12
- इकाई 3 से 4 में से 2 प्रश्न करें- 8
- इकाई 4 से 4 में से 2 प्रश्न करें- 8

Semester 1
AEC-1

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
AEC-1	संस्कृत भाषा एवं सम्प्रेषण-1	240/SKT/AE101	1	1		1	1		2	15	35			50

पाठ्यक्रम विवरण:

यह पाठ्यक्रम संस्कृत भाषा के प्रारंभिक ज्ञान एवं उसके प्रभावी संप्रेषण कौशल के विकास हेतु निर्मित किया गया है। इसमें विद्यार्थियों को संस्कृत भाषा की मूल संरचना, वर्णमाला, उच्चारण पद्धति तथा व्याकरण के आधारभूत तत्वों से परिचित कराया जाएगा। पाठ्यक्रम के अंतर्गत संस्कृत भाषा के उद्देश्य एवं प्रयोजन को स्पष्ट करते हुए यह बताया जाएगा कि आधुनिक संदर्भ में संस्कृत का अध्ययन क्यों आवश्यक है और इसका व्यावहारिक उपयोग किस प्रकार किया जा सकता यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों में न केवल भाषाई दक्षता विकसित करता है, बल्कि उनके संप्रेषण कौशल, सांस्कृतिक चेतना एवं आत्मविश्वास को भी सुदृढ़ बनाता है, जिससे वे संस्कृत भाषा का प्रयोग दैनिक जीवन एवं अकादमिक क्षेत्र में प्रभावी रूप से कर सकें।

अधिगम उद्देश्य

- विद्यार्थियों को संस्कृत भाषा के मूल स्वरूप, उद्देश्य एवं प्रयोजन से परिचित ।
- संस्कृत वर्णमाला एवं ध्वनि-विज्ञान के आधारभूत तत्वों का ज्ञान
- शुद्ध उच्चारण एवं प्रभावी संप्रेषण कौशल का विकास।
- माहेश्वर सूत्र के माध्यम से ध्वन्यात्मक संरचना को समझाना।
- विद्यार्थियों में मंत्रोच्चारण की शुद्धता एवं लयात्मकता का विकास।

पाठ्यक्रम :

इकाई 1 मन्त्र एवं मंत्रोच्चारण

(क) मंत्रोच्चारण (मौखिकी)

- गायत्री मंत्र
- महामृत्युंजय मंत्र
- शांति मंत्र (ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षँ शान्तिः.....)
- नवग्रह शांति मंत्र

(क) संस्कृत अध्ययन के उद्देश्य एवं प्रयोजन

इकाई 2: संस्कृत वर्णमाला परिचय

स्वर, व्यंजन, संयुक्त वर्ण, अनुस्वार, अनुनासिकः, विसर्ग,वर्ण विन्यास , वर्ण संयोग, उच्चारण स्थान, माहेश्वर सूत्र

संदर्भ ग्रंथ- सूची:

1 संस्कृत भाषा एवं संप्रेषण-डॉ सलिन्द्र आचार्य

2 लघुसिद्धान्त कौमुदी-पद्मश्री डॉ कपिलदेव द्विवेदी एवं डॉ भारतेन्दु द्विवेदी

3 मंत्रमहोदधि-शुकदेव चतुर्वेदी

4 अनुवाद प्रक्रिया-काशीनाथ पाण्डेय एवं रामप्यारे मिश्र।

5 बृहद् अनुवाद- चंद्रिका चक्रधर नौटियाल 'हंस' शास्त्री

अधिगम उपलब्धि

इस पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरांत विद्यार्थी–

- संस्कृत भाषा के स्वरूप, महत्व तथा उसके संप्रेषणात्मक उपयोग को समझ सकेंगे।
- संस्कृत वर्णमाला (स्वर, व्यंजन, अनुस्वार, अनुनासिक, विसर्ग) एवं उनके शुद्ध उच्चारण में दक्षता प्राप्त करेंगे।
- वर्ण-विन्यास, वर्ण-संयोग तथा उच्चारण स्थानों का व्यावहारिक ज्ञान अर्जित करेंगे।
- संस्कृत में सरल संप्रेषण (बोलना, समझना) की प्रारंभिक क्षमता विकसित करेंगे।
- माहेश्वर सूत्र, गायत्री मंत्र, महामृत्युंजय मंत्र, शांति मंत्र आदि का शुद्ध एवं सस्वर उच्चारण करने में सक्षम होंगे।

दिशा निर्देश:

- सभी इकाइयों से पांच वस्तुनिष्ठ प्रश्न अनिवार्य हैं। 10
- इकाई 1 (क) से 2 प्रश्नों में से 1 प्रश्न- 5
- इकाई 1(ख) से किन्हीं 4 में से 2 को करें । 8
- इकाई 2 से किन्हीं 8 में से कोई 4 को करें- 12

SEMESTER - 2

AEC-2

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
AEC-2	संस्कृत भाषा एवं सम्प्रेषण-2	240/SKT/AE202	1	1		1	1		2	15	35			50

पाठ्यक्रम विवरण:

यह पाठ्यक्रम छात्रों को संस्कृत भाषा के प्रारम्भिक व्याकरणिक ज्ञान का विद्यर्थियों से परिचय करता है। जिसमें शब्दरूप धातुरूप के साथ संस्कृत के संख्यावाचक शब्दों को तथा दैनिक जीवन में प्रयुक्त शब्दों: फलों पुष्पों के नाम भी सम्मिलित है।

अधिगम उद्देश्य :-

- विद्यार्थियों को संस्कृत भाषा का ज्ञान
- संस्कृत भाषा में प्रयुक्त शब्द रूपों का ज्ञान
- संस्कृत भाषा में प्रयुक्त धातु रूपों का ज्ञान
- दैनिक जीवन में प्रयुक्त शब्दों का ज्ञान **पाठ्यक्रम**

इकाई 1

(क) संस्कृत भाषा का महत्व

(ख) शब्द रूप :-राजन , बालक, कवि, फल ,लता, मति, धेनु ,

(ग)धातु रूप:- भू, गम् , पठ् , हस् ,कृ

इकाई 2 (क) संख्या: 1 से 100 तक संस्कृतसंख्यावाची शब्द

(ख) फल एवं सब्जियों के संस्कृत नाम

संदर्भ ग्रंथ- सूची:

1-संस्कृत भाषा एवं संप्रेषण-डॉ सलिन्द्र आचार्य

2-लघुसिद्धान्त कौमुदी-पद्मश्री डॉ कपिलदेव द्विवेदी एवं डॉ भारतेन्दु द्विवेदी

3-मंत्रमहोदधि-शुकदेव चतुर्वेदी

4-अनुवाद प्रक्रिया-काशीनाथ पाण्डेय

5 - संस्कृता-प्रयोगकोष:-वीरभद्र

6 - बृहद् अनुवाद- चंद्रिका चक्रधर नौटियाल 'हंस' शास्त्री

अधिगम उपलब्धि:-

- संस्कृत भाषा के विभिन्न शब्दरूपों का ज्ञान प्राप्त होगा।
- विद्यार्थियों को संस्कृत भाषा में प्रयुक्त पाँचों लकारों के धातुरूपों का ज्ञान प्राप्त होगा।
- संस्कृत भाषा में १ से १०० तक की संख्याएँ बोलने में समर्थ होंगे।
- विद्यार्थियों को फलों एवं सब्जियों के संस्कृत नामों का ज्ञान प्राप्त होगा।
- विद्यार्थियों को दैनिक जीवन में उपयोग होने वाले शब्दों के संस्कृत रूपों का ज्ञान प्राप्त होगा।

दिशा-निर्देश

सभी इकाइयों से पांच वस्तुनिष्ठ प्रश्न अनिवार्य होंगे- *अंक: 10*

इकाई 1 से 2 में से 1 प्रश्न करें-*अंक: 5*

इकाई 1- से 3 शब्द रूपों में से 1 शब्द रूप -*अंक: 5*

इकाई 1 - से 3 धातु रूपों में से 1 धातु रूप --*अंक: 5*

इकाई 2 - से 10 में से 5 संख्या को संस्कृत में लिखें-*अंक: 5*

इकाई 2 - से किन्हीं 5 फलों और सब्जियों के नाम संस्कृत में लिखें-*अंक: 5*

Semester 3
AEC-3

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
AEC-3	संस्कृत भाषा एवं सम्प्रेषण-3	240/SKT/ AE303	1	1		1	1		2	15	35			50

पाठ्यक्रम विवरण

यह पाठ्यक्रम संस्कृत भाषा के व्यावहारिक एवं आधुनिक प्रयोग पर आधारित है। इसमें विद्यार्थियों को संस्कृत भाषा के दैनिक जीवन में उपयोग, कंप्यूटर एवं तकनीकी क्षेत्र में संस्कृत की संभावनाओं, तथा व्याकरण के महत्वपूर्ण अंग "संधि" का ज्ञान प्रदान किया जाएगा। साथ ही, संस्कृत ध्येय वाक्यों एवं पशु-पक्षी तथा पुष्पों के संस्कृत नामों के माध्यम से भाषा के व्यावहारिक एवं सांस्कृतिक पक्ष को विकसित किया जाएगा।

अधिगम उद्देश्य

- संस्कृत भाषा के व्यावहारिक एवं दैनिक उपयोग से विद्यार्थियों का परिचय।
- संस्कृत और कंप्यूटर/तकनीकी क्षेत्र के संबंध को समझाना।
- संधि (विशेषतः अच् संधि) के नियमों का ज्ञान।
- संस्कृत ध्येय वाक्यों के माध्यम से राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक मूल्यों का विकास।
- विद्यार्थियों को संस्कृत शब्दावली (पशु, पक्षी, पुष्प) का ज्ञान

पाठ्यक्रम

इकाई 1 -(क) संस्कृत भाषा का सामान्य परिचय

(ख) संस्कृत भाषा एवं कंप्यूटर

(ग) संधि - अच् संधि (दीर्घ, गुण, वृद्धि ,यण् संधि)

(घ) समय सूचक संस्कृत शब्द

इकाई 2

(क) प्रसिद्ध ध्येय वाक्य -

- राज्य एवं राष्ट्रीय संस्थानों के संस्कृत ध्येय वाक्य
- प्रमुख शैक्षणिक संस्थानों के संस्कृत ध्येय वाक्य

(ख) पशु पक्षियों एवं पुष्पों के संस्कृत में नाम

संदर्भ ग्रंथ

1. आचार्य, सलिन्द्र. (2019). संस्कृत भाषा एवं संप्रेषण. दिल्ली: विद्या प्रकाशन।
2. द्विवेदी, कपिलदेव, एवं द्विवेदी, भारतेन्दु. (2018). लघुसिद्धान्त कौमुदी. वाराणसी: चौखंबा प्रकाशन।
3. पाण्डेय, काशीनाथ, एवं मिश्र, रामप्यारे. (2017). अनुवाद प्रक्रिया. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन।
4. नौटियाल, चंद्रिका चक्रधर 'हंस'. (2016). बृहद् अनुवाद. दिल्ली: साहित्य भंडार।
5. शास्त्री, हरिदत्त. (2020). संस्कृत व्याकरण परिचय. वाराणसी: चौखंबा सुरभारती।

अधिगम उपलब्धि

इस पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरांत विद्यार्थी–

1. संस्कृत भाषा का सामान्य जीवन में प्रयोग करने में सक्षम होंगे।
2. संस्कृत एवं कंप्यूटर के संबंध को समझ सकेंगे।
3. अच् संधि (दीर्घ, गुण, वृद्धि, यण) के नियमों को पहचानकर उनका प्रयोग कर सकेंगे।
4. विभिन्न संस्थानों के संस्कृत ध्येय वाक्यों का अर्थ एवं महत्व समझ सकेंगे।
5. पशु-पक्षियों एवं पुष्पों के संस्कृत नामों का ज्ञान प्राप्त कर उनका प्रयोग कर सकेंगे।
6. संस्कृत भाषा के प्रति रुचि एवं व्यवहारिक दक्षता विकसित करेंगे।

दिशा-निर्देश

- सभी इकाइयों से **5** वस्तुनिष्ठ प्रश्न (अनिवार्य) - **10** अंक
- इकाई **1** से **2** प्रश्नों में से **1** - **5** अंक
- इकाई **2** से **8** प्रश्नों में से **4** - **12** अंक
- इकाई **2** से **4** प्रश्नों में से **2** - **8** अंक

Semester 4
AEC

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
AEC-4	संस्कृत भाषा एवं सम्प्रेषण-4	240/SKT/ AE404	1	1		1	1		2	15	35			50

पाठ्यक्रम विवरण

यह पाठ्यक्रम संस्कृत भाषा के व्यावहारिक एवं अनुप्रयोगात्मक अध्ययन पर केंद्रित है। इसमें विद्यार्थियों को संस्कृत के दैनिक जीवन में प्रयोग, सूचना एवं तकनीकी क्षेत्र में इसकी उपयोगिता, तथा व्याकरण के महत्वपूर्ण अंग—कारक एवं उपपद विभक्ति—का ज्ञान कराया जाएगा। साथ ही, वाक्य-विन्यास एवं परिचय के माध्यम से विद्यार्थियों में संस्कृत में अभिव्यक्ति की क्षमता विकसित की जाएगी।

अधिगम उद्देश्य

- संस्कृत भाषा के व्यावहारिक प्रयोग में दक्ष ।
- सूचना एवं तकनीकी (IT) क्षेत्र में संस्कृत की भूमिका से परिचित ।
- कारक एवं उपपद विभक्ति के नियमों का स्पष्ट ज्ञान ।
- शुद्ध वाक्य-निर्माण एवं संप्रेषण कौशल विकास ।
- संस्कृत में परिचय एवं सरल संवाद ।

पाठ्यक्रम:

इकाई -1 कारक प्रकरण

- कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, संबंध, अधिकरण, सम्बोधन,

उपपद विभक्ति

1. आधी, अनु, उप, उभयतः, परितः, निकषा, प्रति, धिक्, विना (योगे द्वितीय विभक्ति)
2. अलम्, विना, हिनम्, सह. साकम्, सार्धम्, समय, (तृतीया विभक्ति)
3. नमः, रुच, दा, स्पृह, अलम् (चतुर्थी विभक्ति)

इकाई - 2 सूचना एवं तकनीकी में संस्कृत भाषा का उपयोग

वाक्यविन्यास

संस्कृत भाषा में परिचय (7 वाक्य)

संदर्भ ग्रंथ-सूची :

1-संस्कृत भाषा एवं संप्रेषण-डॉ० सलिन्द्र आचार्य

2-लघुसिद्धान्त कौमुदी-पद्मश्री डॉ० कपिलदेव द्विवेदी एवं डॉ० भारतेन्दु द्विवेदी

3-मंत्रमहोदधि-शुकदेव चतुर्वेदी

4-अनुवाद प्रक्रिया-काशीनाथ पाण्डेय एवं रामप्यारे मिश्र।

5 -संस्कृता-प्रयोगकोषः-वीरभद्र

6- बृहत अनुवाद - चंद्रिका चक्रधर नौटियाल 'हंस 'शास्त्री

अधिगम उपलब्धि :-

- विद्यार्थियों को संस्कृत भाषा का सामान्य जीवन में प्रयोग करने का ज्ञान प्राप्त होगा ।
- संस्कृत भाषा में प्रयुक्त स्वर संधि का ज्ञान प्राप्त होगा।
- विद्यार्थियों को राष्ट्रीय एवं राज्यीय ध्येय वाक्यों का बोध कराया जाएगा ।
- 4.विद्यार्थियों को पशु पक्षियों एवं पुष्पों के संस्कृत नामों का अवबोध कराया जाएगा।

दिशा -निर्देश :

- सभी इकाइयों में से दस वस्तुनिष्ठ प्रश्न अनिवार्य है-10
- इकाई 1 से 2 प्रश्नों में से 1 प्रश्न-5
- इकाई 1 से 6 में से 3 कारक की परिभाषा एवं उदाहरण 6
- इकाई 1 से 8 में से ४ उपपद विभक्ति को बताएं -8
- इकाई 2 से 2 प्रश्नों में से 1 प्रश्न- - 6

19

Semester 1
MIC-1

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
MIC-1	संस्कृत साहित्ये राष्ट्रवाद:	240/SKT/MI 101	1	1		1	1		2	15	35			50

पाठ्यक्रम विवरण

यह पाठ्यक्रम संस्कृत साहित्य में निहित राष्ट्रवादी भावना एवं सांस्कृतिक चेतना के अध्ययन पर आधारित है। इसमें वैदिक साहित्य के माध्यम से राष्ट्र, भूमि, संस्कृति एवं एकता की अवधारणाओं को समझाया जाएगा।

अधिगम उद्देश्य

- संस्कृत साहित्य में राष्ट्रवाद की अवधारणा से विद्यार्थियों को परिचित।
- वैदिक साहित्य में राष्ट्र एवं पृथ्वी के प्रति भावनाओं को समझाना।
- विद्यार्थियों में राष्ट्रीय चेतना एवं सांस्कृतिक गौरव की भावना का विकास।

पाठ्यक्रम :

इकाई 1: अथर्ववेद - पृथ्वी सूक्त (मंत्र 1-20)

- पृथ्वी सूक्त का परिचय
- चयनित मंत्रों का पाठ, पदच्छेद एवं भावार्थ
- मातृभूमि एवं राष्ट्रीय भावना का विश्लेषण

इकाई 2: शुक्ल यजुर्वेद के 22वें अध्याय राष्ट्र सूक्त (मंत्र 1-22)

- **राष्ट्र सूक्त** का परिचय
- चयनित मंत्रों का पाठ, पदच्छेद एवं भावार्थ

संदर्भ ग्रंथ

1. **अथर्ववेद**. (2016). अथर्ववेद संहिता. गोरखपुर: गीता प्रेस।
2. अथर्ववेद डॉ० व्रजबिहारी चौबे , कात्यायन वैदिक साहित्य प्रकाशन होशियारपुर

3. अथर्ववेद सुबोध भाष्य, दामोदर सात वलेकर , स्वाध्याय मंडल किल्ला पारडी जिला वलसाड
4. शुक्ल यजुर्वेद संहिता (संपादक/अनुवादक: डॉ. उमाशंकर शर्मा ऋषि) चौखम्बा प्रकाशन
5. शुक्लयजुर्वेद-माध्यन्दिनसंहिता (वेदार्थपारिजात - स्वामी करपात्री जी महाराज)
6. शुक्लयजुर्वेद (माध्यन्दिनसंहिता) - रामानुज उपाध्याय
7. द्विवेदी, कपिलदेव. (2019). संस्कृत साहित्य का इतिहास. वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन।

अधिगम उपलब्धि

इस पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरांत विद्यार्थी–

- संस्कृत साहित्य में राष्ट्रवाद की अवधारणा को समझ सकेंगे।
- अथर्ववेद के पृथ्वी सूक्त के मंत्रों का भावार्थ एवं महत्व स्पष्ट कर सकेंगे।
- राष्ट्र एवं संस्कृति के प्रति सम्मान एवं उत्तरदायित्व की भावना विकसित करेंगे।

दिशा- निर्देश :

- सभी इकाइयों पांच वस्तुनिष्ठ प्रश्न अनिवार्य है - 10
- इकाई 1 से 4 में से 2 मंत्र की से सप्रसंग व्याख्या करें -10
- इकाई 2 से 4 में से 2 मंत्र की से सप्रसंग व्याख्या करें -10
- इकाई 1 और इकाई 2 से 2 में से 1 आलोचनात्मक प्रश्न को करें । 5

Semester 2
MIC-2

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
				(Hrs)			Credits			TI	TE	PI	PE	Total
MIC-2	संस्कृत साहित्य में नाट्य एवं रंगमंच	240/SKT/MI 202	1	1		1	1		2	15	35			50

पाठ्यक्रम विवरण सिद्धांतों के अध्ययन पर

यह पाठ्यक्रम संस्कृत साहित्य की समृद्ध नाट्य परंपरा एवं भारतीय रंगमंच के
केंद्रित है। इसमें प्राचीन नाट्यशास्त्रीय परंपरा से लेकर संस्कृत नाटकों की संरचना, कथानक, पात्र-निर्माण
तथा रंगमंचीय प्रस्तुति के विभिन्न आयामों का अध्ययन कराया जाएगा।
विशेष रूप से नाट्यशास्त्र के सिद्धांतों, नाट्य के अंगों, रस-सिद्धांत तथा अभिनय के प्रकारों का अध्ययन
किया जाएगा। साथ ही, संस्कृत के प्रमुख नाटककारों एवं उनके नाटकों के माध्यम से भारतीय रंगमंच की
परंपरा एवं विकास को समझाया जाएगा।

अधिगम उद्देश्य

- संस्कृत नाट्य परंपरा एवं रंगमंच के मूल सिद्धांतों से परिचित।
- नाट्यशास्त्र के प्रमुख सिद्धांतों (रस, अभिनय आदि) का ज्ञान।
- संस्कृत नाटकों की संरचना एवं विशेषताओं को समझाना।
- विद्यार्थियों में नाट्याभिनय एवं रंगमंचीय दृष्टि का विकास।

<u>**पाठ्यक्रम :**</u>

इकाई 1.भरत मुनि एवं नाट्यशास्त्र का परिचय

नाटक की उत्पत्ति

विकास एवं स्वरूप

रंगमंच के भेद

इकाई 2

(क) रंगमंच का स्वरूप- रंग ग्रह, मंडपनिवेश, चित्रकर्म, स्तम्भस्थापना, रंगशीर्ष, दारुकर्म

(ख) अभिनय का सामान्य परिचय

अभिनय के प्रकार- आंगिक, सात्विक , वाचिक , आहार्य

संदर्भ ग्रंथ

1. नाट्यशास्त्र (2016) वाराणसी: चौखंबा प्रकाशन।
2. भरतमुनि का नाट्यशास्त्र (सेट): राजेंद्र त्यागी द्वारा संपादित
3. नाट्यशास्त्र: प्रथम भाग - डा. बाबूलाल शुक्ल शास्त्री, चौखम्बा संस्कृत संस्थान
4. अभिनवभारती (हिन्दी अनुवाद के साथ): अभिनवगुप्त द्वारा लिखित
5. द्विवेदी, कपिलदेव. (2020). संस्कृत साहित्य का इतिहास. वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन।

अधिगम उपलब्धि

इस पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरांत विद्यार्थी–

- संस्कृत नाट्य परंपरा एवं रंगमंच के सिद्धांतों को समझ सकेंगे।
- नाट्यशास्त्र के प्रमुख तत्त्वों का विश्लेषण कर सकेंगे।
- संस्कृत नाटकों की संरचना, कथानक एवं पात्र-निर्माण का अध्ययन कर सकेंगे।
- रंगमंचीय प्रस्तुति एवं अभिनय के मूल सिद्धांतों को व्यावहारिक रूप में समझ सकेंगे।
- भारतीय सांस्कृतिक परंपरा के प्रति संवेदनशीलता विकसित करेंगे।

दिशा-निर्देश:

* सभी इकाइयों से पांच वस्तुनिष्ठ प्रश्न अनिवार्य है । 10
* इकाई 1 से 3 में से 2 प्रश्न करें । 10
• इकाई 2 (क) से 4 में से 2 टिप्पणी लिखें । 7
• इकाई 2 (ख) से 4 में से 2 दो को करें। 8

semester- 3rd
MIC-3

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
MIC-3	रामायण	240/SKT/MI303	3	1		3	1		4	30	70			100

पाठ्यक्रम विवरण

यह पाठ्यक्रम रामायण के साहित्यिक, सांस्कृतिक, नैतिक तथा दार्शनिक पक्षों का समग्र अध्ययन प्रस्तुत करता है। पाठ्यक्रम के अंतर्गत रामायण के प्रमुख काण्डों, पात्रों, घटनाओं एवं आदर्शों का विश्लेषण किया जाएगा, जिससे विद्यार्थियों में भारतीय जीवन-मूल्यों, धर्म, कर्तव्य, आदर्श नेतृत्व, पारिवारिक संबंधों तथा लोकमंगल की भावना का विकास हो सके। इस पाठ्यक्रम में राम, सीता, लक्ष्मण, भरत, हनुमान तथा रावण जैसे प्रमुख पात्रों के चरित्र का आलोचनात्मक अध्ययन किया जाएगा। साथ ही रामायण की विभिन्न परंपराओं– वाल्मीकि रामायण, अध्यात्म रामायण तथा रामचरितमानस –का तुलनात्मक परिचय भी कराया जाएगा।

पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को न केवल संस्कृत साहित्य की महाकाव्य परंपरा से परिचित कराएगा, बल्कि भारतीय सांस्कृतिक चेतना, नैतिकता, सुशासन एवं मानवीय मूल्यों की गहन समझ विकसित करने में भी सहायक होगा। वर्तमान सामाजिक एवं वैश्विक संदर्भों में रामायण की प्रासंगिकता का अध्ययन भी इस पाठ्यक्रम का महत्वपूर्ण भाग होगा।

अधिगम उद्देश्य:-

- रामायण का सामान्य ज्ञान
- संस्कृत महाकाव्य के इतिहास का ज्ञान
- रामायण के साहित्यिक, सांस्कृतिक, नैतिक तथा दार्शनिक पक्षों का समग्र अध्ययन
- भारतीय जीवन-मूल्यों, धर्म, कर्तव्य, आदर्श नेतृत्व, पारिवारिक संबंधों तथा लोकमंगल की भावना का विकास

पाठ्यक्रम :

इकाई 1 (क) रामायण (सुंदरकाण्ड- 14वां सर्ग)

इकाई 2 (ख) रामायण (सुंदरकाण्ड- 15वां सर्ग)

इकाई 3 इकाई-1 : रामायण का सामान्य परिचय

1. रामायण का स्वरूप एवं महत्व
2. रामायण का रचनाकाल एवं लेखक परिचय
3. आदिकाव्य की विशेषताएँ
4. सुंदरकाण्ड का सारांश

इकाई 4

(क) स्त्री विमर्श -

अनुसूया, अहिल्या,सीता, कैकेयी, कौशल्या

(ख) रामायण के प्रमुख पात्रों का चरित्र-वर्णन

श्रीराम का आदर्श

लक्ष्मण का भ्रातृभक्ति एवं सेवा-भाव

भरत का चरित्र भ्रातृप्रेम

संदर्भ ग्रंथ सूची

मुख्य ग्रंथ

1. वाल्मीकि रामायण. (2018). *वाल्मीकि रामायण* (सम्पा. रामनारायण शास्त्री). वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत संस्थान।
2. वाल्मीकि रामायण सुन्दरकाण्ड (संस्कृत एवं हिन्दी अनुवाद) प्रकाशक: गीता प्रेस, गोरखपुर, 2016

सहायक ग्रंथ

1. संस्कृत साहित्य का इतिहास. (2020). *संस्कृत साहित्य का इतिहास.* वाराणसी: शारदा निकेतन।
2. रामायणकालीन संस्कृति. (2016). *रामायणकालीन संस्कृति.* नई दिल्ली: भारतीय विद्या प्रकाशन।
3. भारतीय संस्कृति. (2015). *भारतीय संस्कृति.* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
4. संस्कृत महाकाव्य की परंपरा. (2018). *संस्कृत महाकाव्य की परंपरा.* वाराणसी: चौखम्बा ओरिएंटालिया।
5. रामकथा. (2014). *रामकथा: उत्पत्ति और विकास.* प्रयागराज: हिंदी परिषद प्रकाशन।

अधिगम उपलब्धि :-

1.विद्यार्थियों को रामायण का सामान्य ज्ञान प्राप्त होगा।

2. विद्यार्थियों को महाकाव्य के इतिहास की जानकारी प्राप्त होगी ।

25

3. संस्कृत भाषा में प्रयुक्त धातु रूपों का ज्ञान प्राप्त होगा।
4. संस्कृत भाषा में प्रयुक्त प्रकृति प्रत्यय का ज्ञान प्राप्त होगा।

दिशा - निर्देश :

- सभी इकाइयों से 8 वस्तुनिष्ठ प्रश्न अनिवार्य है - 16
- इकाई 1 से 6 में से 3 की सप्रसंग व्याख्या -15
- इकाई 2 से 6 में से 3 श्लोक की सप्रसंग व्याख्या -15
- इकाई 3 से 2 में से 1 आलोचनात्मक प्रश्न -8
- इकाई 4 (क) से 2 में 1 आलोचनात्मक प्रश्न-8
- इकाई 4 **(ख)** में से 2 में से 1 आलोचनात्मक प्रश्न -8

SEMESTER – 4TH
MIC-4

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
MIC-4	वैदिक यज्ञ पद्धति	NEW	3	1		3	1		4	30	70	-	-	100

पाठ्यक्रम विवरण:

यह पाठ्यक्रम वैदिक यज्ञ-परंपरा के वैज्ञानिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक पक्षों का अध्ययन प्रस्तुत करता है। इसके अंतर्गत यज्ञ की उत्पत्ति, स्वरूप, उद्देश्य, सामग्री, वैदिक मंत्रोच्चारण पद्धति का विश्लेषण किया जाएगा। पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को यज्ञ की पारंपरिक एवं आधुनिक वैज्ञानिक उपयोगिता से परिचित कराते हुए मानसिक शांति तथा स्वास्थ्य-संवर्धन में यज्ञ की भूमिका का ज्ञान प्रदान करेगा।

अधिगम उद्देश्य:

- यज्ञ की वैदिक अवधारणा एवं स्वरूप का परिचय
- यज्ञ की उपयोगिता।
- यज्ञ-सामग्री एवं मंत्रोच्चारण के प्रभावों का अध्ययन
- वैदिक परंपरा एवं आधुनिक विज्ञान के समन्वय

पाठ्यक्रम :

इकाई-1 : यज्ञ का स्वरूप एवं आधार

- यज्ञ की उत्पत्ति
- यज्ञ का अर्थ एवं परिभाषा
- यज्ञ के प्रकार एवं उद्देश्य
- यज्ञ के लाभ

इकाई-2 : विविध वैदिक यज्ञ

- यज्ञ-कुण्ड : स्वरूप एवं निर्माण
- यज्ञशाला का महत्त्व
- यज्ञपात्र एवं उनकी उपयोगिता

- यज्ञ सामग्री का परिचय
- समिधा, घृत, हविष्य

इकाई-3 : वैदिक मंत्रोच्चारण का प्रभाव

- वैदिक मंत्रोच्चारण की विधि
- स्वर, मात्रा एवं उच्चारण शुद्धि
- ईश्वर-स्तुति मंत्र
- प्रार्थना मंत्र
- उपासना मंत्र
- यज्ञ में मंत्रों का महत्त्व
- यज्ञ एवं मानसिक शांति

इकाई-4 : पञ्चमहायज्ञ

- पञ्चमहायज्ञ : स्वरूप एवं अवधारणा
- वैदिक जीवन में पञ्चमहायज्ञ का महत्त्व
- मनुष्ययज्ञ / अतिथियज्ञ
- पञ्चमहायज्ञ एवं सामाजिक उत्तरदायित्व
- पञ्चमहायज्ञ का पर्यावरणीय एवं नैतिक महत्त्व
- दैनिक जीवन में पञ्चमहायज्ञ की उपयोगिता

संदर्भ ग्रंथ- सूची:

मुख्य ग्रंथ

1. ऋग्वेद. (2018). *ऋग्वेद संहिता* (सम्पा. सातवलेकर). पारडी: स्वाध्याय मंडल।
2. यजुर्वेद. (2019). *यजुर्वेद संहिता.* वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत संस्थान।
3. शतपथ ब्राह्मण. (2017). *शतपथ ब्राह्मण.* दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।

सहायक ग्रंथ

1. वैदिक संस्कृति. (2015). *वैदिक संस्कृति.* नई दिल्ली: भारतीय विद्या भवन।
2. यज्ञ का वैज्ञानिक स्वरूप. (2018). *यज्ञ का वैज्ञानिक स्वरूप.* दिल्ली: संस्कृति प्रकाशन।
3. भारतीय संस्कृति. (2017). *भारतीय संस्कृति.* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
4. वैदिक साहित्य का इतिहास. (2019). *वैदिक साहित्य का इतिहास.* वाराणसी: चौखम्बा विद्याभवन।
5. यज्ञ विमर्श- एक वैज्ञानिक अध्ययन, डॉ० रामप्रकाश, सत्य प्रकाशन न्यास कुरुक्षेत्र

अधिगम परिणाम

पाठ्यक्रम पूर्ण होने पर विद्यार्थी–

1. यज्ञ की वैदिक अवधारणा को समझ सकेंगे।
2. यज्ञ-सामग्री एवं मंत्रों की उपयोगिता का विश्लेषण कर सकेंगे।
3. वैदिक परंपरा एवं आधुनिक विज्ञान के समन्वय को समझ सकेंगे।
4. वैदिक मंत्रोच्चारण की मूल विधि का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करेंगे।

दिशा -निर्देश :

- सभी इकाइयों से 8 वस्तुनिष्ठ प्रश्न अनिवार्य है -16
- इकाई 1 से 2 में से 1 प्रश्न करें- 8
- इकाई 2 से 4 में से 2 प्रश्न करें- 16
- इकाई 3 से 4 में से 2 प्रश्न करें - 16
- इकाई 4 से 4 में से 2 प्रश्न करें - 14

SEMESTER – 5TH

MIC-5

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
MIC-5	पुराण साहित्य	New	3	1		3	1		4	30	70	-	-	100

पाठ्यक्रम विवरण

यह पाठ्यक्रम भारतीय पुराण साहित्य की परंपरा, स्वरूप, विषय-वस्तु एवं सांस्कृतिक महत्व का समग्र अध्ययन प्रस्तुत करता है। इसमें प्रमुख पुराणों की संरचना, पौराणिक आख्यान, धार्मिक एवं दार्शनिक तत्त्व, भारतीय संस्कृति पर पुराणों के प्रभाव तथा सामाजिक-नैतिक मूल्यों का अध्ययन कराया जाएगा। पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को भारतीय धार्मिक परंपरा, सांस्कृतिक चेतना तथा लोकजीवन में पुराणों की भूमिका से परिचित कराएगा।

अधिगम उद्देश्य

- पुराण साहित्य की उत्पत्ति एवं विकास का परिचय
- प्रमुख पुराणों एवं उनके विषय-वस्तु का अध्ययन
- पुराणों में निहित धार्मिक, दार्शनिक एवं सांस्कृतिक तत्वों को समझाना।
- भारतीय समाज एवं संस्कृति पर पुराणों के प्रभाव का अध्ययन
- पुराण साहित्य की आधुनिक संदर्भों में प्रासंगिकता

इकाई-1 : पुराण साहित्य का परिचय

- पुराण शब्द : अर्थ एवं परिभाषा
- पुराण साहित्य की उत्पत्ति एवं विकास
- पुराणों के पञ्चलक्षण

इकाई-2 : प्रमुख पुराणों का अध्ययन

- अष्टादश महापुराण : सामान्य परिचय
- पुराणों का धार्मिक एवं सांस्कृतिक महत्त्व

इकाई-3 : पुराणों में धर्म, दर्शन एवं संस्कृति

- पुराणों में नैतिक मूल्य
- पुराण एवं भारतीय संस्कृति
- पुराणों में नारी एवं समाज

इकाई-4 : पुराण साहित्य का साहित्यिक एवं सामाजिक अध्ययन

- पुराण एवं इतिहास
- पुराण साहित्य का लोकसाहित्य पर प्रभाव
- भारतीय कला, संगीत एवं नाट्य पर पुराणों का प्रभाव

संदर्भ ग्रंथ- सूची:

मुख्य ग्रंथ

1. भागवत पुराण. (2018). *श्रीमद्भागवत महापुराण.* गोरखपुर: गीता प्रेस।
2. विष्णु पुराण. (2017). *विष्णु पुराण.* वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत संस्थान।
3. शिव पुराण. (2019). *शिव महापुराण.* गोरखपुर: गीता प्रेस।
4. मार्कण्डेय पुराण. (2016). *मार्कण्डेय पुराण.* दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।
5. गरुड़ पुराण. (2015). *गरुड़ पुराण.* वाराणसी: चौखम्बा विद्याभवन।

सहायक ग्रंथ

1. पुराण विमर्श. (2018). *पुराण विमर्श.* नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ।
2. संस्कृत साहित्य का इतिहास. (2020). *संस्कृत साहित्य का इतिहास.* वाराणसी: शारदा निकेतन।
3. भारतीय संस्कृति. (2017). *भारतीय संस्कृति.* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
4. पुराण साहित्य का इतिहास. (2019). *पुराण साहित्य का इतिहास.* वाराणसी: चौखम्बा ओरिएंटालिया।
5. भारतीय धर्म और संस्कृति. (2016). *भारतीय धर्म और संस्कृति.* प्रयागराज: हिंदी साहित्य सम्मेलन।

अधिगम परिणाम

पाठ्यक्रम पूर्ण होने पर विद्यार्थी–

- पुराण साहित्य की मूल अवधारणाओं को समझ सकेंगे।
- प्रमुख पुराणों के धार्मिक एवं सांस्कृतिक पक्षों का विश्लेषण कर सकेंगे।
- भारतीय संस्कृति एवं समाज पर पुराणों के प्रभाव को स्पष्ट कर सकेंगे।
- पुराणों के साहित्यिक एवं दार्शनिक पक्षों का मूल्यांकन कर सकेंगे।
- आधुनिक संदर्भों में पुराण स:हित्य की प्रासंगिकता को समझ सकेंगे।

दिशा -निर्देश :

- सभी इकाइयों से 8 वस्तुनिष्ठ प्रश्न अनिवार्य है -16

- इकाई 1 से 2 में से 1 प्रश्न करें- 8
- इकाई 2 से 4 में से 2 प्रश्न करें- 16
- इकाई 3 से 4 में से 2 प्रश्न करें - 16
- इकाई 4 से 4 में से 2 प्रश्न करें - 14

SEMESTER – 6TH
MIC-6

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
MIC-6	भारतीय सामाजिक संस्थान और राज्य व्यवस्था	New	3	1		3	1		4	30	70	-	-	100

पाठ्यक्रम विवरण

यह पाठ्यक्रम भारतीय सामाजिक संस्थाओं एवं राज्य व्यवस्था की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं दार्शनिक पृष्ठभूमि का अध्ययन प्रस्तुत करता है। इसमें परिवार, वर्णाश्रम व्यवस्था, शिक्षा, धर्म तथा सामाजिक संगठन जैसी भारतीय संस्थाओं का विश्लेषण किया जाएगा। साथ ही प्राचीन भारतीय राज्य व्यवस्था, शासन प्रणाली, राजधर्म, न्याय व्यवस्था एवं प्रशासनिक तंत्र का अध्ययन कराया जाएगा। यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों में भारतीय सामाजिक संरचना एवं शासन-परंपरा के प्रति सम्यक् समझ विकसित करेगा।

पाठ्यक्रम उद्देश्य

- भारतीय सामाजिक संस्थाओं की संरचना एवं कार्यप्रणाली का अध्ययन
- वर्णाश्रम, परिवार एवं शिक्षा व्यवस्था की अवधारणा को समझाना।
- प्राचीन भारतीय राज्य व्यवस्था एवं प्रशासनिक प्रणाली का परिचय
- भारतीय राजनितिक चिंतन एवं राजधर्म का अध्ययन
- भारतीय समाज एवं शासन प्रणाली की आधुनिक संदर्भों में प्रासंगिकता

इकाई-1 : भारतीय सामाजिक संस्थाओं का परिचय

- भारतीय समाज : स्वरूप एवं विशेषताएँ
- परिवार व्यवस्था एवं उसका महत्त्व
- वर्ण व्यवस्था : स्वरूप एवं उद्देश्य
- आश्रम व्यवस्था एवं जीवन-मूल्य

इकाई-2 : प्राचीन भारतीय शिक्षा

- प्राचीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था
- गुरुकुल प्रणाली
- शिक्षक एवं छात्र का संबंध
- शिक्षा के उद्देश्य एवं आदर्श
- स्त्री-शिक्षा एवं समाज में स्थान
- शिक्षा एवं चरित्र निर्माण
- भारतीय ज्ञान परंपरा

इकाई-3 : भारतीय राज्य व्यवस्था

- राज्य : अर्थ एवं परिभाषा
- प्राचीन भारतीय राज्य की अवधारणा
- राजा के कर्तव्य एवं राजधर्म
- न्याय व्यवस्था एवं दण्डनीति
- आदर्श शासन व्यवस्था

इकाई-4 : भारतीय राजनीतिक चिंतन एवं समकालीन संदर्भ

- अर्थशास्त्र में राज्य व्यवस्था
- राजधर्म एवं नैतिकता
- भारतीय राज्य व्यवस्था एवं आधुनिक संविधान
- सामाजिक न्याय एवं समानता

अधिगम परिणाम

पाठ्यक्रम पूर्ण होनें पर विद्यार्थी–

- भारतीय सामाजिक संस्थाओं की संरचना एवं कार्यप्रणाली को समझ सकेंगे।
- प्राचीन भारतीय शिक्षा एवं राज्य व्यवस्था का विश्लेषण कर सकेंगे।
- भारतीय राजनैतिक एवं सामाजिक चिंतन का मूल्यांकन कर सकेंगे।
- भारतीय शासन प्रणाली एवं आधुनिक लोकतांत्रिक मूल्यों के संबंध को समझ सकेंगे।
- सामाजिक एवं नैतिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित कर सकेंगे।

मुख्य ग्रंथ

1. अर्थशास्त्र. (2017). *कौटिलीय अर्थशास्त्र.* दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।
2. याज्ञवल्क्यस्मृति. (2019). *याज्ञवल्क्यस्मृति.* वाराणसी: चौखम्बा विद्याभवन।
3. महाभारत. (2016). *महाभारत.* गोरखपुर: गीता प्रेस।

सहायक ग्रन्थ

1. भारतीय संस्कृति. (2017). *भारतीय संस्कृति.* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।

2. प्राचीन भारतीय राज्य व्यवस्था. (2018). *प्राचीन भारतीय राज्य व्यवस्था.* दिल्ली: भारतीय विद्या प्रकाशन।
3. संस्कृत साहित्य का इतिहास. (2020). *संस्कृत साहित्य का इतिहास.* वाराणसी: शारदा निकेतन।
4. भारतीय राजनीतिक चिंतन. (2019). *भारतीय राजनीतिक चिंतन.* प्रयागराज: हिंदी साहित्य सम्मेलन।
5. भारतीय समाज व्यवस्था. (2016). *भारतीय समाज व्यवस्था.* नई दिल्ली: लोकभारती प्रकाशन।

दिशा -निर्देश :

- सभी इकाइयों से 8 वस्तुनिष्ठ प्रश्न अनिवार्य है -16
- इकाई 1 से 2 में से 1 प्रश्न करें- 8
- इकाई 2 से 4 में से 2 प्रश्न करें- 16
- इकाई 3 से 4 में से 2 प्रश्न करें - 16
- इकाई 4 से 4 में से 2 प्रश्न करें - 14

SEMESTER – 6TH
MIC-7

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
				(Hrs)		Credits				TI	TE	PI	PE	Total
MIC-7	लौकिक संस्कृत साहित्य (नाटक)	New	3	1		3	1		4	30	70	-	-	100

पाठ्यक्रम विवरण

यह पाठ्यक्रम लौकिक संस्कृत साहित्य की नाट्य एवं छन्द परंपरा का समग्र अध्ययन प्रस्तुत करता है। इसके अंतर्गत संस्कृत नाटक की उत्पत्ति, विकास, प्रमुख नाटककारों एवं नाटकों का अध्ययन कराया जाएगा। साथ ही संस्कृत छन्दशास्त्र की मूल अवधारणाओं, वर्णिक एवं मात्रिक छन्दों तथा उनके साहित्यिक प्रयोग का परिचय दिया जाएगा। यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों में साहित्यिक सौंदर्य-बोध, काव्य-रुचि तथा संस्कृत साहित्य की शास्त्रीय परंपरा की समझ विकसित करेगा।

पाठ्यक्रम उद्देश्य

- संस्कृत नाट्य साहित्य की परंपरा एवं विशेषताओं का अध्ययन ।
- प्रमुख संस्कृत नाटककारों एवं नाटकों का परिचय ।
- छन्दशास्त्र की मूल अवधारणाओं एवं प्रकारों का ज्ञान ।
- संस्कृत साहित्य में छन्दों के सौंदर्य एवं प्रयोग को समझाना।
- साहित्यिक विश्लेषण एवं काव्यबोध की क्षमता का विकास।

इकाई-1 : संस्कृत नाटक का परिचय

- नाटक : अर्थ एवं परिभाषा
- संस्कृत नाटक की उत्पत्ति एवं विकास
- नाट्यशास्त्र का सामान्य परिचय
- संस्कृत नाटक की विशेषताएँ

इकाई-2 : प्रमुख संस्कृत नाटककार

भास, कालिदास, भवभूति, शूद्रक

इकाई-3 : अभिज्ञानशाकुन्तलम्

अभिज्ञानशाकुन्तलम् : प्रथम एवं द्वितीय अंक

इकाई-4 : अभिज्ञानशाकुन्तलम्

अभिज्ञानशाकुन्तलम्- तृतीय एवं चतुर्थ अंक

संदर्भ ग्रंथ:

मुख्य ग्रंथ

1. नाट्यशास्त्र. (2018). *नाट्यशास्त्र.* वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत संस्थान।
2. अभिज्ञानशाकुन्तलम्. (2019). *अभिज्ञानशाकुन्तलम्.* दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।
3. मृच्छकटिकम्. (2017). *मृच्छकटिकम्.* वाराणसी: चौखम्बा विद्याभवन।
4. उत्तररामचरितम्. (2016). *उत्तररामचरितम्.* वाराणसी: चौखम्बा ओरिएंटालिया।
5. स्वप्नवासवदत्तम्. (2018). *स्वप्नवासवदत्तम्.* नई दिल्ली: साहित्य भण्डार।

सहायक ग्रंथ

1. संस्कृत साहित्य का इतिहास. (2020). *संस्कृत साहित्य का इतिहास.* वाराणसी: शारदा निकेतन।
2. संस्कृत नाटक. (2017). *संस्कृत नाटक.* नई दिल्ली: भारतीय विद्या प्रकाशन।
3. भारतीय नाट्य परंपरा. (2016). *भारतीय नाट्य परंपरा.* दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
4. काव्यशास्त्र. (2018). *काव्यशास्त्र.* प्रयागराज: हिंदी साहित्य सम्मेलन।

अधिगम परिणाम

पाठ्यक्रम पूर्ण होने पर विद्यार्थी–

1. संस्कृत नाट्य परंपरा एवं प्रमुख नाटकों का ज्ञान प्राप्त करेंगे।
2. संस्कृत नाटकों के साहित्यिक एवं सांस्कृतिक महत्त्व को समझ सकेंगे।
3. छन्दों की पहचान एवं विश्लेषण कर सकेंगे।
4. संस्कृत काव्य में छन्दों की भूमिका का मूल्यांकन कर सकेंगे।
5. साहित्यिक एवं सौंदर्यपरक दृष्टि का विकास कर सकेंगे।

दिशा -निर्देश :

- सभी इकाइयों से 8 वस्तुनिष्ठ प्रश्न अनिवार्य है -16
- इकाई 1 से 2 में से 1 प्रश्न करें- 8
- इकाई 2 से 4 में से 2 प्रश्न करें- 16
- इकाई 3 से 4 में से 2 प्रश्न करें - 16
- इकाई 4 से 4 में से 2 प्रश्न करें - 14

SEMESTER – 4TH

VOC-1

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
VOC-1	**आयुर्विज्ञान**	Revised	3	1		3	1		4	30	70			100

पाठ्यक्रम विवरण

यह पाठ्यक्रम संस्कृत साहित्य में निहित आयुर्वेद संबंधी ज्ञान परंपरा का परिचय प्रदान करता है। इसमें आयुर्वेद की उत्पत्ति, विकास, मूल सिद्धांत तथा भारतीय ज्ञान परंपरा में उसके महत्व का अध्ययन कराया जाएगा। पाठ्यक्रम के अंतर्गत आयुर्वेद के प्रमुख ग्रंथों, त्रिदोष सिद्धांत, स्वास्थ्य संरक्षण, आहार-विहार, औषधि ज्ञान तथा जीवन शैली संबंधी अवधारणाओं का परिचय दिया जाएगा। साथ ही संस्कृत साहित्य में वर्णित चिकित्सा, स्वास्थ्य एवं मानव कल्याण संबंधी विचारों का अध्ययन भी कराया जाएगा। यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को भारतीय चिकित्सा परंपरा एवं संस्कृत साहित्य के अंतर्संबंध को समझने में सहायक होगा।

पाठ्यक्रम उद्देश्य

- आयुर्वेद की मूल अवधारणाओं एवं सिद्धांतों का ज्ञान
- संस्कृत साहित्य में आयुर्वेद संबंधी ज्ञान परंपरा का परिचय
- आयुर्वेद के प्रमुख ग्रंथों एवं आचार्यों के योगदान को समझना
- त्रिदोष, धातु, मल एवं स्वास्थ्य संरक्षण संबंधी सिद्धांतों का ज्ञान
- भारतीय जीवन शैली एवं स्वास्थ्य विज्ञान में आयुर्वेद की उपयोगिता
- संस्कृत ग्रंथों में निहित चिकित्सा एवं स्वास्थ्य संबंधी विचारों के प्रति रुचि

इकाई 1

- आयुर्वेद का सामान्य परिचय , उदभव एवं विकास
- आयुर्वेद का अर्थ एवं परिभाषा-
- आयुर्वेद के मूलभूत सिद्धांत
- आयुर्वेद की वर्तमान काल में उपयोगिता एवं महत्व

इकाई 2 आयुर्वेद के प्रमुख आचार्य-

- चरक
- सुश्रुत
- शार्ङ्गधर
- वागभट्
- भावमिश्र

इकाई 3

- आयुर्विज्ञान
- आयुर्वेद का प्रयोजन
- जीवन चर्या
- रोगनिवारण की प्राचीन पद्धति

इकाई 4 अष्टांग आयुर्वेद

शल्य,शालक्य,काय,भूतविद्या,कौमार भृत्य,अगदतंत्र,रसायन तंत्र,वाजीकरणतंत्र

संदर्भ ग्रंथ

1. चरक. (2018). *चरकसंहिता.* वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत संस्थान।
2. सुश्रुत. (2017). *सुश्रुतसंहिता.* वाराणसी: चौखम्बा ओरिएंटालिया।
3. वाग्भट. (2019). *अष्टाङ्गहृदयम्.* दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।
4. अष्टाङ्गसंग्रह. (2016). वाराणसी: चौखम्बा प्रकाशन।
5. शर्मा, प्रियव्रत. (2020). *आयुर्वेद का इतिहास.* वाराणसी: चौखम्बा विद्याभवन।
6. त्रिपाठी, ब्रह्मानन्द. (2018). *चरकसंहिता : हिंदी व्याख्या.* दिल्ली: चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन।
7. मिश्र, काशीनाथ, एवं शास्त्री, गोरखनाथ. (2015). *सुश्रुतसंहिता : व्याख्या सहित.* वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत सीरीज।
8. भावप्रकाश. (2014). वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत संस्थान।
9. माधवनिदान. (2013). दिल्ली: राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान।
10. सिंह, रामहर्ष. (2021). *आयुर्वेद परिचय.* प्रयागराज: हिन्दी साहित्य सम्मेलन।

अधिगम परिणाम

पाठ्यक्रम पूर्ण होने पर विद्यार्थी–

- आयुर्वेद की आधारभूत संकल्पनाओं की व्याख्या कर सकेंगे।
- आयुर्वेद के प्रमुख ग्रंथों एवं आचार्यों की पहचान कर सकेंगे।
- स्वास्थ्य, आहार एवं जीवन शैली संबंधी आयुर्वेदिक सिद्धांतों को समझ सकेंगे।
- संस्कृत साहित्य एवं आयुर्वेद के अंतर्संबंध का विश्लेषण कर सकेंगे।
- भारतीय चिकित्सा परंपरा के सांस्कृतिक एवं वैज्ञानिक महत्व को समझ सकेंगे।

- आयुर्वेद अध्ययन के उच्च स्तर हेतु आवश्यक आधारभूत ज्ञान प्राप्त करेंगे।

दिशा - निर्देश :

- सभी इकाइयों में से 8 प्रश्न अनिवार्य है। 16
- इकाई 1 से 3 में से 2 प्रश्न्न लिखें । 12
- इकाई 2 से 4 में से 3 का परिचय लिखें। 15
- इकाई 3 से 3 में से 2 प्रश्न लिखें । 12
- इकाई 4 से 5 में से 3 पर टिप्पणी लिखें । 15

SEMESTER – 5TH

VOC-2

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
VOC-2	ज्योतिष का मूलभूत ज्ञान	Revised	3	1		3	1		4	30	70			100

पाठ्यक्रम विवरण

यह पाठ्यक्रम भारतीय ज्योतिष की मूलभूत अवधारणाओं का परिचय प्रदान करता है। इसमें ज्योतिष के स्वरूप, महत्व, ऐतिहासिक विकास तथा भारतीय ज्ञान परंपरा में उसके स्थान का अध्ययन कराया जाएगा। पाठ्यक्रम के अंतर्गत ग्रह, राशियाँ, नक्षत्र, पंचांग, कुंडली, भाव एवं कालगणना जैसे आधारभूत विषयों का सरल एवं व्यावहारिक परिचय दिया जाएगा। साथ ही विद्यार्थियों को पारंपरिक ज्योतिषीय सिद्धांतों एवं आधुनिक जीवन में उनकी उपयोगिता से भी परिचित कराया जाएगा। यह पाठ्यक्रम ज्योतिष अध्ययन के प्रारंभिक स्तर के विद्यार्थियों के लिए आधारभूमि तैयार करेगा।

पाठ्यक्रम उद्देश्य

- भारतीय ज्योतिष की मूल अवधारणाओं एवं स्वरूप को समझना ।
- ग्रह, राशियों, नक्षत्रों एवं पंचांग का आधारभूत ज्ञान ।
- कुंडली एवं भावों की प्रारंभिक संरचना को समझना ।
- भारतीय कालगणना एवं ज्योतिषीय गणना पद्धति का परिचय ।
- ज्योतिष के सांस्कृतिक, दार्शनिक एवं सामाजिक महत्व का मूल्यांकन ।
- ज्योतिष संबंधी पारंपरिक ग्रंथों एवं सिद्धांतों के प्रति रुचि ।

पाठ्यक्रम :

इकाई 1

- भारतीय ज्योतिष की प्राचीनता

- ज्योतिष के प्रमुख ग्रंथों का विवरण
- प्राचीन भारतीय काल विभाजन
- ज्योतिष शास्त्र की उपयोगिता

इकाई 2 : प्रसिद्ध भारतीय ज्योतिषी

भास्कराचार्य ,वराहमिहिर ,आर्यभट्ट , ब्रह्मगुप्त , महर्षि पराशर, वैद्यनाथ

इकाई 3 त्रिस्कंध ज्योतिष--सिद्धांत-संहिता-होरा

इकाई 4-ज्योतिष शास्त्र की वैज्ञानिकता

- खगोल विज्ञान तथा ज्योतिष
- मौसम विज्ञान तथा ज्योतिष

संदर्भ ग्रंथ

1. पराशर. (2018). *बृहत्पाराशर होरा शास्त्र.* वाराणसी: चौखम्बा प्रकाशन।
2. वराहमिहिर. (2016). *बृहत्जातकम्.* वाराणसी: चौखम्बा विद्याभवन।
3. शर्मा, सत्यदेव. (2019). *वैदिक ज्योतिष के मूल सिद्धांत.* नई दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।
4. रमण, बी. वी. (2017). *भारतीय ज्योतिष विज्ञान.* नई दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।
5. मंत्रेश्वर. (2015). *फलदीपिका.* वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत संस्थान।
6. वैद्यनाथ दीक्षित. (2014). *जातक पारिजात.* वाराणसी: चौखम्बा ओरिएंटालिया।
7. शास्त्री, नेमिचन्द्र. (2018). *भारतीय ज्योतिष का इतिहास.* जयपुर: राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी।
8. चतुर्वेदी, गोरखनाथ. (2020). *ज्योतिष परिचय.* प्रयागराज: हिन्दी साहित्य सम्मेलन।
9. सूर्यसिद्धांत. (2012). वाराणसी: संस्कृत संस्थान।
10. लघु पाराशरी. (2011). दिल्ली: राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान।

अधिगम उपलब्ध :-

- भारतीय प्राच्यज्ञान के प्रति अभिरुचि उत्पन्न होगी ।
- भारतीय ज्योतिषशास्त्र का सामान्य ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
- ज्योतिष के विभिन्न सिद्धांतों के ज्ञान के माध्यम से विश्लेषण क्षमता जागृत होगी ।
- ज्योतिषशास्त्र की वैज्ञानिकता का ज्ञान होगा।

दिशा निर्देश :-

- सभी इकाइयों में से आठ वस्तुनिष्ठ प्रश्न अनिवार्य है।16
- इकाई 1 से 4 में से 2 प्रश्न करें। 16
- इकाई 2 से 6 में से 3 का परिचय लिखें ।12
- इकाई 3 से 4 में से 2 प्रश्न करें । 14
- इकाई 4 से 4 में से 2 प्रश्न लिखे।12

SEMESTER – 6TH

VOC-3

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
VOC-3	**लेखन कौशल एवं संस्कृत पत्रकारिता**	Revised	3	1		3	1		4	30	70			100

पाठ्यक्रम विवरण

यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों में संस्कृत भाषा के प्रभावी लेखन कौशल तथा पत्रकारिता संबंधी व्यावहारिक दक्षताओं का विकास करने हेतु निर्मित है। इसके अंतर्गत संस्कृत में लेखन की विविध विधाओं–निबंध, पत्र, संवाद, समाचार, रिपोर्ट एवं संपादकीय लेखन–का अध्ययन कराया जाएगा। साथ ही संस्कृत पत्रकारिता के इतिहास, स्वरूप, विकास एवं आधुनिक डिजिटल माध्यमों में संस्कृत के प्रयोग का परिचय दिया जाएगा। यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को सृजनात्मक लेखन, भाषिक अभिव्यक्ति तथा मीडिया लेखन की व्यावहारिक समझ प्रदान करेगा।

पाठ्यक्रम उद्देश्य

- संस्कृत भाषा में प्रभावी एवं शुद्ध लेखन कौशल का विकास ।
- समाचार, रिपोर्ट, संवाद एवं संपादकीय लेखन की मूलभूत विधियों की समझ ।
- संस्कृत पत्रकारिता के इतिहास एवं विकास का परिचय ।
- प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक एवं डिजिटल मीडिया में संस्कृत के प्रयोग का ज्ञान ।
- संस्कृत में सृजनात्मक एवं व्यावसायिक लेखन ।
- मीडिया एवं संचार के क्षेत्र में संस्कृत भाषा की उपयोगिता का मूल्यांकन ।

इकाई 1 : लेखन कौशल का परिचय

- लेखन : अर्थ, स्वरूप एवं महत्व
- संस्कृत लेखन की विशेषताएँ
- सृजनात्मक लेखन की मूल अवधारणाएँ

इकाई 2 : व्यावहारिक लेखन

- संवाद लेखन
- रिपोर्ट लेखन
- विज्ञापन लेखन
- भाषण एवं आलेख लेखन
- अनुवाद एवं रूपांतरण कला
- समाचार लेखन की आधारभूत विधियाँ

इकाई 3 : संस्कृत पत्रकारिता - स्वरूप एवं विकास

- पत्रकारिता : अर्थ, परिभाषा एवं उद्देश्य
- संस्कृत पत्रकारिता का इतिहास एवं विकास
- पत्रकारिता की भाषा एवं शैली

इकाई 4 : मीडिया एवं व्यवहारिक प्रशिक्षण

- संस्कृत पत्रकारिता के प्रमुख माध्यम -
  समाचार पत्र
  पत्रिकाएँ
  रेडियो - दूरदर्शन
  डिजिटल मीडिया
- प्रमुख संस्कृत पत्र-पत्रिकाओं का परिचय -
  सुधर्मा
  संस्कृत प्रतिभा

संदर्भ ग्रंथ

1. शर्मा, रमेशचन्द्र. (2018). संस्कृत पत्रकारिता. वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत संस्थान।
2. त्रिपाठी, राधावल्लभ. (2019). आधुनिक संस्कृत साहित्य एवं पत्रकारिता. नई दिल्ली: संस्कृत भारती।
3. तिवारी, अर्जुन. (2017). भ:रतीय पत्रकारिता का इतिहास. नई दिल्ली: प्रकाशन संस्थान।
4. मिश्र, श्यामसुन्दर. (2020). संस्कृत वार्तालाप. प्रयागराज: हिन्दी साहित्य सम्मेलन।
5. द्विवेदी, कपिलदेव. (2016). रचनानुवाद कौमुदी. वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन।
6. पाण्डेय, गिरीश. (2021). संस्कृत व्यवहारकौशल. दिल्ली: राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान।

7. सुधर्मा. (विभिन्न अंक). मैसूर।
8. संस्कृत प्रतिभा. (विभिन्न अंक). नई दिल्ली।

अधिगम परिणाम

पाठ्यक्रम पूर्ण होने पर विद्यार्थी–

- आयुर्वेद की आधारभूत संकल्पनाओं की व्याख्या कर सकेंगे।
- आयुर्वेद के प्रमुख ग्रंथों एवं आचार्यों की पहचान कर सकेंगे।
- स्वास्थ्य, आहार एवं जीवन शैली संबंधी आयुर्वेदिक सिद्धांतों को समझ सकेंगे।
- संस्कृत साहित्य एवं आयुर्वेद के अंतर्संबंध का विश्लेषण कर सकेंगे।
- भारतीय चिकित्सा परंपरा के सांस्कृतिक एवं वैज्ञानिक महत्व को समझ सकेंगे।
- आयुर्वेद अध्ययन के उच्च स्तर हेतु आवश्यक आधारभूत ज्ञान प्राप्त करेंगे।

दिशा - निर्देश :

- सभी इकाइयों में से 8 प्रश्न अनिवार्य है- 16
- इकाई 1 से 3 में से 2 प्रश्न्न लिखें - 12
- इकाई 2 से 4 में से 2 प्रश्न्न लिखें -16
- इकाई 3 से 3 में से 2 प्रश्न लिखें - 10
- इकाई 4 से 4 में से 2 प्रश्न्न लिखें -16

Semester 1

SEC

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
SEC-1	संस्कृत साहित्ये योगात्मक एवं ध्यानं	240/SKT/SE101	2		1	2		1	3	15	35	05	20	75

पाठ्यक्रम विवरण

यह पाठ्यक्रम संस्कृत साहित्य में वर्णित योग एवं ध्यान की परंपरा, सिद्धांत तथा व्यवहारिक पक्ष का परिचय प्रदान करता है। इसमें भारतीय ज्ञान परंपरा में योग की अवधारणा, योग के प्रकार, अष्टाङ्गयोग, ध्यान पद्धतियाँ तथा मानसिक एवं आध्यात्मिक विकास में योग के महत्व का अध्ययन कराया जाएगा। पाठ्यक्रम के अंतर्गत वैदिक, उपनिषदिक, गीता तथा योगदर्शन में वर्णित योग-सिद्धांतों का परिचय भी दिया जाएगा। साथ ही विद्यार्थियों को योग एवं ध्यान की व्यावहारिक उपयोगिता तथा आधुनिक जीवन में उसकी प्रासंगिकता से अवगत कराया जाएगा।

पाठ्यक्रम उद्देश्य

- योग एवं ध्यान की मूल अवधारणाओं को समझा।
- संस्कृत साहित्य में वर्णित योग परंपरा एवं उसके दार्शनिक आधार का परिचय।
- अष्टाङ्गयोग एवं ध्यान की विभिन्न विधियों को जानना।
- मानसिक, शारीरिक एवं आध्यात्मिक विकास में योग की भूमिका।
- योग एवं ध्यान के सांस्कृतिक तथा व्यावहारिक महत्व का मूल्यांकन।
- भारतीय ज्ञान परंपरा के योग-संबंधी ग्रंथों के अध्ययन में रुचि।

पाठ्यक्रम :

इकाई 1: योग की उत्पत्ति,अर्थ,परिभाषा,योग का इतिहास एवं परंपरा,योग की उपयोगिता एवं महत्व, योग का वातावरण,योग की भारतीय अवधारणा, प्रमुख आचार्य एवं ग्रंथ

इकाई 2 :योगसूत्र - समाधिपापद (1- 29सूत्र)

योगसूत्र- साधनपाद (29- 55सूत्र)

इकाई 3 योग के अंग -

- यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, तथा समाधि
- **योगासन** : पद्मासन, ताड़ासन , धनुरासन ,गोमुखासन, कुर्मासन, मत्स्येंद्रासान , मयूरासन, शवासन, योगासनों का महत्व, सूर्यनमस्कार

प्रायोगिक इकाई : योग एवं ध्यान अभ्यास

- योग का व्यवहारिक परिचय
- शांति मंत्र एवं ओंकार उच्चारण
- सूक्ष्म व्यायाम एवं शरीर शुद्धि अभ्यास
- सूर्यनमस्कार का अभ्यास
- प्रमुख आसनों का अभ्यास - ताड़ासन, वज्रासन, पद्मासन, भुजंगासन
- प्राणायाम अभ्यास -
  बाह्यवृत्ति (रेचक)
  आभ्यन्तरवृत्ति (पूरक)
  स्तम्भवृत्ति (कुंभक)
  चतुर्थ /केवली प्राणायाम
- ध्यान एवं एकाग्रता अभ्यास
- योगनिद्रा का प्रारंभिक परिचय
- संस्कृत योग मंत्रों का शुद्ध उच्चारण
- योग एवं ध्यान की प्रायोगिक प्रस्तुति

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

* **संदर्भ ग्रंथ**

1. पतञ्जलि. (2018). *योगसूत्रम्.* वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत संस्थान।
2. भगवद्गीता. (2019). गोरखपुर: गीताप्रेस।
3. हठयोगप्रदीपिका. (2017). वाराणसी: चौखम्बा ओरिएंटालिया।
4. घेरण्डसंहिता. (2016). दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।
5. शिवसंहिता. (2015). वाराणसी: चौखम्बा विद्याभवन।
6. विवेकानन्द, स्वामी विवेकानन्द. (2020). *राजयोग.* कोलकाता: अद्वैत आश्रम।
7. शर्मा, रामकृष्ण. (2018). *भारतीय योग परंपरा.* नई दिल्ली: राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान।

8. त्रिपाठी, राधावल्लभ. (2019). *भारतीय दर्शन एवं योग.* नई दिल्ली: संस्कृत भारती।
9. उपनिषद्. (2014). वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत सीरीज।
10. योगवासिष्ठ. (2013). दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।
11. हठयोगप्रदीपिका, व्याख्याकार अजय कुमार उत्तम, भारतीय विद्या संस्थान वाराणसी
12. जाबलदर्शनोपनिषद, संपादक श्रीराम शर्मा, युगनिर्माण योजना प्रेस मथुरा
13. योगासन और योग साधना डॉ० सत्यपाल, चौखंबा संस्कृत संस्थान वाराणसी

अधिगम परिणाम

पाठ्यक्रम पूर्ण होने पर विद्यार्थी

- योग एवं ध्यान की आधारभूत संकल्पनाओं की व्याख्या कर सकेंगे।
- योगदर्शन एवं संस्कृत ग्रंथों में वर्णित योग सिद्धांतों का विश्लेषण कर सकेंगे।
- अष्टाङ्गयोग के अंगों एवं ध्यान प्रक्रियाओं की पहचान कर सकेंगे।
- योग एवं ध्यान की व्यावहारिक उपयोगिता को दैनिक जीवन में समझ सकेंगे।
- भारतीय संस्कृति एवं आध्यात्मिक परंपरा में योग के योगदान का मूल्यांकन कर सकेंगे।
- योग अध्ययन के उच्च स्तर हेतु आवश्यक आधारभूत ज्ञान अर्जित करेंगे।

दिशा निर्देश :-

- सभी इकाइयों से 5 वस्तुनिष्ठ प्रश्न अनिवार्य हैं ।10
- इकाई 1 से 2 में से 1प्रश्न करें। 7
- इकाई 2 से 6 में से 3 सूत्र करें। 9
- इकाई 3 से 6 में से 3 को करें। 9

SEMESTER 2

SEC-2

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
SEC-2	वैदिक आचार एवं उपासना पद्धति	Revised	2		1	2		1	3	15	35	05	20	75

पाठ्यक्रम विवरण

यह पाठ्यक्रम भारतीय संस्कृति, धर्म और वैदिक परंपराओं के मूलभूत पहलुओं पर आधारित है। इसमें विद्यार्थियों को संध्या उपासना की विधि, यज्ञ के तत्व, और वैदिक मंत्रों के महत्व के बारे में सिखाया जाता है। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य शास्त्रों में निहित ज्ञान को समझना और उसे व्यावहारिक जीवन में लागू करना है।

पाठ्यक्रम का उद्देश्य:

- विद्यार्थियों को संध्या उपासना की विधि, उसकी महत्ता और परंपरा का ज्ञान।
- संकल्प और स्वस्तिवाचन के आध्यात्मिक और सांस्कृतिक महत्व को समझाना
- भारतीय परंपराओं और वैदिक संस्कृति के आधारभूत तत्वों के प्रति आदर और रूचि का विकास ।

पाठ्यक्रम :

इकाई 1 : प्रातःकालीन नित्य विधि एवं संध्या उपासना

- नित्यकर्म का स्वरूप एवं महत्व
- प्रातः वंदन का परिचय
- प्रातः स्मरण एवं मंगलाचरण
- स्नान विधि एवं शुद्धिकरण प्रक्रिया
- संध्या उपासना विधि : स्वरूप एवं महत्व
- संध्या पात्रों का परिचय एवं उपयोग

इकाई 2 : संकल्प एवं स्तुति विधान

- संकल्प : अर्थ, स्वरूप एवं आवश्यकता
- संकल्प की पारंपरिक विधि
- स्वस्तिवाचन : स्वरूप एवं प्रयोग
- दैनिक उपासना में स्तुति का महत्व

इकाई 3 : यज्ञीय परंपरा

- यज्ञीय सामग्री का परिचय
- हवन सामग्री एवं समिधा के प्रकार
- यज्ञ की सामान्य प्रक्रिया
- भारतीय संस्कृति में यज्ञ का सामाजिक एवं आध्यात्मिक महत्व

प्रायोगिक इकाई : नित्यकर्म विधि

- प्रातः वंदन एवं करदर्शन का अभ्यास
- आचमन एवं शुद्धिकरण विधि
- स्नान मंत्र एवं स्नान विधि का व्यवहारिक ज्ञान
- संध्या उपासना का अभ्यास
- संध्या पात्रों का परिचय एवं उपयोग
- संकल्प एवं स्वस्तिवाचन का उच्चारण अभ्यास
- स्तुति, शांति मंत्र एवं प्रार्थना पाठ
- दीप प्रज्वलन एवं पूजा की सामान्य विधि
- हवन सामग्री का परिचय
- पंचमहायज्ञ की व्यवहारिक जानकारी
- यज्ञ की सामान्य प्रक्रिया का प्रदर्शन
- मौखिक परीक्षा / प्रायोगिक प्रस्तुति

संदर्भ ग्रंथ

1. याज्ञवल्क्यस्मृति. (2017). वाराणसी: चौखम्बा विद्याभवन।
2. संध्योपासन विधि. (2019). दिल्ली: राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान।
3. गृह्यसूत्र. (2016). वाराणसी: चौखम्बा ओरिएंटालिया।
4. शर्मा, श्रीराम. (2020). *यज्ञ का ज्ञान विज्ञान.* हरिद्वार: अखिल विश्व गायत्री परिवार।
5. ऋग्वेद. (2015). गोरखपुर: गीता प्रेस।
6. अथर्ववेद. (2014). वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत सीरीज।
7. त्रिपाठी, कृष्णदत्त. (2018). *वैदिक संस्कार एवं नित्यकर्म.* प्रयागराज: हिन्दी साहित्य सम्मेलन।

8. नित्यकर्म पूजाप्रकाश-पं लालबिहारी मिश्र
9. स्तोत्र रत्नावली -श्री शिवजीत सिंह
10. शिवमहिम्नःस्तोत्र – पुष्पदन्त
11. नित्यकर्म पूजा प्रकाश
12. कर्मठ गुरु
13. सामान्य पूजा पद्धति

पाठ्यक्रम के परिणाम:

- विद्यार्थी संध्या उपासना की विधि और उसमें उपयोग होने वाले प्रतीकों को समझ पाएंगे।
- संकल्प और स्वस्तिवाचन के महत्व को आत्मसात कर जीवन में उनकी उपयोगिता का अनुभव करेंगे।
- यज्ञीय सामग्री के निर्माण और उसके उपयोग में दक्षता प्राप्त करेंगे।

दिशा-निर्देश:

- सभी इकाइयों में से 5 वस्तुनिष्ठ प्रश्न (अनिवार्य): 10 अंक
- इकाई 1 से 3 में से 2 टिप्पणी लिखें: 10 अंक
- इकाई 2 से 2 में से 1 टिप्पणी लिखें: 5 अंक
- इकाई 3 से 3 में से 2 टिप्पणी लिखें: 10 अंक

Semester 6

SEC-3

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
SEC-3	संस्कृत भाषा में उच्चारण प्रक्रिया एवं कंप्यूटर का प्रयोग	Revised	2		1	2		1	3	15	35	05	20	75

पाठ्यक्रम विवरण

यह पाठ्यक्रम संस्कृत भाषा के शुद्ध उच्चारण, ध्वनि-विज्ञान तथा आधुनिक कंप्यूटर तकनीक के प्रयोग का आधारभूत परिचय प्रदान करता है। इसमें संस्कृत वर्णमाला, स्वर एवं व्यंजन उच्चारण, संधि, स्वराघात तथा वैदिक एवं लौकिक उच्चारण पद्धति का अध्ययन कराया जाएगा। साथ ही विद्यार्थियों को संस्कृत टंकण, यूनिकोड, ई-संसाधन, डिजिटल उपकरणों तथा कंप्यूटर आधारित संस्कृत अनुप्रयोगों का व्यावहारिक ज्ञान दिया जाएगा। यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को भाषा कौशल एवं तकनीकी दक्षता दोनों में सक्षम बनाने का प्रयास करेगा।

पाठ्यक्रम उद्देश्य

- संस्कृत भाषा के शुद्ध उच्चारण की प्रक्रिया को समझना।
- संस्कृत ध्वनि-विज्ञान एवं वर्णोच्चारण के नियमों का ज्ञान।
- कंप्यूटर में संस्कृत टंकण एवं यूनिकोड प्रणाली का प्रयोग सीखना।
- संस्कृत भाषा से संबंधित डिजिटल संसाधनों एवं सॉफ्टवेयर का उपयोग।
- भाषा अध्ययन एवं शोध में कंप्यूटर तकनीक की उपयोगिता।

पाठ्यक्रम :

इकाई 1 :महेश्वर सूत्र ,उच्चारण स्थान, कंठस्थ श्लोक

इकाई 2 : कम्प्यूटर का सामान्य परिचय

- संस्कृत की दृष्टि से कम्प्यूटर की उपयोगिता

- कंप्यूटर में संस्कृत लेखन हेतु उपयोगी टूल्स - यूनि कोड , गूगल इनपुट, टोल, गूगल असिस्टेंट एवं वॉइस टाइपिंग आदि।

इकाई 3 : इंटरनेट का प्रयोग वेब सर्च ,ई टैक्स ,ई बुक्स, ई मैगजीन, डिजिटल लाइब्रेरी

- ऑनलाइन टीचिंग लर्निंग प्लेटफॉर्म : जुम , टीम, मीट , वेबैक्स ,ऑनलाइन लर्निंग एवं रिसर्च प्लेटफार्म ,ई पाठशाला, ।

प्रायोगिक इकाई : संस्कृत उच्चारण एवं कंप्यूटर प्रयोग

- संस्कृत वर्णमाला का शुद्ध उच्चारण अभ्यास
- स्वर एवं व्यंजन उच्चारण प्रक्रिया
- वैदिक एवं लौकिक उच्चारण का अभ्यास
- संस्कृत श्लोक एवं मंत्र पाठ
- यूनिकोड आधारित संस्कृत टंकण अभ्यास
- संस्कृत टाइपिंग सॉफ्टवेयर का परिचय
- कंप्यूटर में संस्कृत फॉन्ट इंस्टॉलेशन एवं प्रयोग
- ई-मेल, दस्तावेज एवं प्रस्तुतीकरण में संस्कृत का प्रयोग
- डिजिटल संस्कृत संसाधनों एवं ऑनलाइन उपकरणों का परिचय
- प्रायोगिक प्रस्तुति

संदर्भ- ग्रंथ :

- लघु सिद्धांत कौमुदी - वरदराज आचार्य
- कंप्यूटर का परिचय - अग्रवाल शिव प्रकाशन इंदौर
- कंप्यूटर फंडामेंटल- पी०के सिन्हा, नई दिल्ली, बी०पी०बी ,नई दिल्ली
- इनफॉरमेशन टेक्नोलॉजी - सुमिता अरोड़ा , धनपत राय पब्लिकेशन ,नई दिल्ली।

अधिगम परिणाम

पाठ्यक्रम पूर्ण होने पर विद्यार्थी–

- संस्कृत वर्णों एवं शब्दों का शुद्ध उच्चारण कर सकेंगे।
- संस्कृत ध्वनि-विज्ञान एवं स्वराघात की आधारभूत अवधारणाओं की व्याख्या कर सकेंगे।
- संस्कृत टंकण एवं डिजिटल लेखन कार्य स्वतंत्र रूप से कर सकेंगे।
- यूनिकोड एवं कंप्यूटर आधारित संस्कृत उपकरणों का प्रयोग करने में सक्षम होंगे।
- संस्कृत भाषा के अध्ययन, अध्यापन एवं शोध में तकनीकी साधनों का उपयोग कर सकेंगे।

- आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी एवं संस्कृत भाषा के अंतर्संबंध का विश्लेषण कर सकेंगे।

दिशा - निर्देश :

- वस्तुनिष्ठ प्रश्न 10 में से 5 करें -10
- इकाई 1 से 4 में से 2को परिभाषित करें -9
- इकाई 2 से 4 में से 2 प्रश्न लिखें -10
- इकाई 3 से 4 में से 2 टिप्पणी लिखें -6

Semester 1
VAC-1

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
VAC-1	भारतीय ज्ञान परंपरा: शिक्षा एवं संस्कृति का स्वरूप	Revised	2			2			2	15	35	-	-	50

पाठ्यक्रम विवरण

यह पाठ्यक्रम भारतीय शिक्षा परंपरा, गुरुकुल व्यवस्था, षोडश संस्कार, चतुर्दश विद्याओं, चौंसठ कलाओं तथा वर्णाश्रम व्यवस्था जैसे भारतीय सांस्कृतिक एवं दार्शनिक आधारों का परिचय प्रदान करता है। पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थियों को प्राचीन भारतीय ज्ञान-परंपरा, सामाजिक व्यवस्था तथा वैदिक जीवन-मूल्यों की समझ विकसित होगी। इसके साथ ही भारतीय विवाह संस्था एवं सांस्कृतिक परंपराओं का व्यावहारिक एवं नैतिक पक्ष भी विद्यार्थियों के समक्ष प्रस्तुत किया जाएगा।

अधिगमन उद्देश्य:

इस पाठ्यक्रम के उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

- भारतीय शिक्षा परंपरा एवं गुरुकुल व्यवस्था का ज्ञान।
- आचार्य, गुरु एवं उपाध्याय की भूमिका एवं महत्व से परिचित।
- षोडश संस्कारों के सांस्कृतिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक महत्व को समझाना।
- भारतीय ज्ञान परंपरा में वर्णित 14 विद्याओं एवं 64 कलाओं का परिचय।
- वर्णाश्रम व्यवस्था एवं भारतीय सामाजिक संरचना की मूल अवधारणाओं को स्पष्ट समझना।
- भारतीय विवाह संस्था एवं विवाह के प्रकारों का सांस्कृतिक अध्ययन।

इकाई–1 : भारतीय शिक्षा परंपरा एवं संस्कार

- भारतीय शिक्षा का स्वरूप एवं उद्देश्य
- प्राचीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था का परिचय
- गुरुकुल व्यवस्था : स्वरूप एवं विशेषताएँ
- आचार्य, गुरु एवं उपाध्याय : अर्थ, स्वरूप एवं कर्तव्य

- विद्यार्थी के आचार एवं अनुशासन
- षोडश संस्कार : परिचय एवं महत्व

इकाई–2 : भारतीय ज्ञान परंपरा : विद्याएँ एवं कलाएँ

- भारतीय ज्ञान परंपरा का परिचय
- चतुर्दश विद्याओं का स्वरूप एवं महत्व
- शिक्षा एवं कला का पारस्परिक संबंध
- वर्ण व्यवस्था
- आश्रम व्यवस्था

संदर्भ ग्रंथ

1. अल्तेकर, ए. एस. (2009). *प्राचीन भारत में शिक्षा*। वाराणसी: नन्दकिशोर एण्ड ब्रदर्स।
2. काणे, पी. वी. (1998). *धर्मशास्त्र का इतिहास* (खंड 1–5)। पुणे: भण्डारकर ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट।
3. पाण्डेय, राजबली. (1969). *हिन्दू संस्कार*। दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।
4. राधाकृष्णन, सर्वपल्ली. (2008). *भारतीय दर्शन* (खंड 1–2)। नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
5. शर्मा, आर. एन. (2002). *प्राचीन भारतीय शिक्षा एवं संस्कृति*। नई दिल्ली: अटलांटिक पब्लिशर्स।
6. विद्यालंकार, सत्यकेतु. (2014). *भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता*। नई दिल्ली: राजपाल एण्ड सन्स।
7. मनुस्मृति। (2017). (सम्पा. एस. सी. बनर्जी)। दिल्ली: परिमल पब्लिकेशन्स।
8. याज्ञवल्क्यस्मृति। (2015). (सम्पा. यू. सी. पाण्डेय)। वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत सीरीज।
9. आप्टे, वी. एस. (2016). *संस्कृत-अंग्रेजी शब्दकोश*। दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।
10. कपूर, ए. सी. (2018). *प्राचीन भारतीय शिक्षा के सिद्धांत*। नई दिल्ली: क्लासिकल पब्लिशिंग कम्पनी।
11. भारतीय संस्कृति ,दीपक कुमार, चौखंबा सुरभारती प्रकाशन , वाराणसी
12. प्राचीन भारत का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास, मोतीलाल बनारसी दास दिल्ली
13. हिंदू संस्कार (सामाजिक एवं आर्थिक अध्ययन) चौखंबा विद्या भवन, वाराणसी

अधिगमन उपलब्धि

पाठ्यक्रम पूर्ण करने के पश्चात विद्यार्थी–

- भारतीय शिक्षा व्यवस्था एवं गुरुकुल परंपरा की विशेषताओं को समझ सकेंगे।
- आचार्य, गुरु एवं उपाध्याय की भूमिका का विश्लेषण करने में सक्षम होंगे।
- षोडश संस्कारों के महत्व एवं उनके सामाजिक प्रभाव का वर्णन कर सकेंगे।
- 14 विद्याओं एवं 64 कलाओं का सामान्य ज्ञान प्राप्त करेंगे।
- वर्णाश्रम व्यवस्था एवं भारतीय सामाजिक संगठन की मूल अवधारणाओं को समझ सकेंगे।
- विवाह के विभिन्न प्रकारों एवं उनके सांस्कृतिक महत्व का अध्ययन कर सकेंगे।

दिशा -निर्देश:

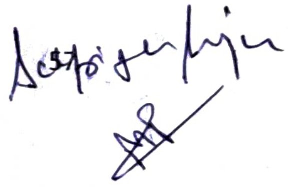

- सभी इकाइयों में से पांच वस्तुनिष्ठ प्रश्न अनिवार्य है। 10
- इकाई1 से 4 में से 2 प्रश्न करें। 12
- इकाई 2 से 4 में से 2 प्रश्न करें। 13

SEMESTER 2

VAC-2

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
VAC-2	विदुरनीति	240/SKT/VA202	2			2			2	15	35			50

पाठ्यक्रम विवरण

इस पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थियों को विदुरनीति की नैतिक शिक्षाओं और वैदिक मंत्रों के आध्यात्मिक महत्व से परिचित कराया जाएगा , जिससे वे जीवन में धर्म, विवेक, और शांति का समावेश कर सकेंगे । इस पाठ्यक्रम में विदुरनीति के नैतिक सिद्धांतों को समझाया जाएगा ।

पाठ्यक्रम के उद्देश्य

- विद्यार्थियों को विदुर नीति में निर्धारित नैतिक ढांचे और व्यक्तिगत तथा व्यावसायिक जीवन में इसके व्यावहारिक निहितार्थों से परिचय
- विद्यार्थियों को धर्म, विवेक और शासन के महत्व को समझने में मदद करने के लिए विदुर नीति (प्रथम अध्याय, श्लोक 1-50) का गहन अध्ययन
- संस्कृत ग्रंथों के साथ आलोचनात्मक रूप से जुड़ने और उनकी व्यावहारिक शिक्षाओं का पता लगाने की क्षमता विकसित करना।

पाठ्यक्रम :

इकाई 1 विदुरनीति प्रथम अध्याय (श्लोक संख्या 1 से 25)

इकाई 2 विदुर नीति प्रथम अध्याय, (श्लोक संख्या 26 से 50)

संदर्भ ग्रंथ सूची -

1. विदुर नीति डॉ रामचंद्र तिवारी
2. गीता प्रेस। (2023). *विदुर-नीति* (14वाँ सं.). गोरखपुर: गीता प्रेस।

3. प्रभात प्रकाशन *विदुर नीति*। नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन।
4. हिन्द पॉकेट बुक्स *विदुर नीति*। नई दिल्ली: Hind Pocket Books।
5. स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती *विदुरनीतिः*। वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत सीरीज।
6. झा, वाई. एन. 'तूफान' *विदूर नीति* (बुक–1)। नई दिल्ली: अमित पॉकेट बुक्स।

पाठ्यक्रम के परिणाम:

इस पाठ्यक्रम को पूरा करने के बाद, छात्र निम्न कार्य करने में सक्षम होंगे:

- विदुर नीति में नैतिक और नैतिक शिक्षाओं का विश्लेषण करना और समकालीन जीवन में उनकी प्रासंगिकता।
- चयनित श्लोकों में दिए गए दार्शनिक अंतर्दृष्टि पर चिंतन करना और उन्हें निर्णय लेने में लागू करना।
- संस्कृत साहित्य और वैदिक परंपराओं के कालातीत ज्ञान की सराहना करना और उसे बनाए रखना।

दिशा -निर्देश:

- सभी इकाइयों में से पांच वस्तुनिष्ठ प्रश्न (अनिवार्य): 10 अंक
- इकाई 1 से 4 श्लोकों में से 2 की सप्रसंग व्याख्या करें: 12 अंक
- इकाई 2 से 4 श्लोकों में से 2 की सप्रसंग व्याख्या करें: 8 अंक
- इकाई 1 और इकाई 2 से आलोचनात्मक प्रश्न (2 में से 1): 5 अंक

Semester 6

VAC-3

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
VAC-3	चाणक्य नीति	240/SKT/VA303	2			2			2	15	35			50

पाठ्यक्रम विवरण

यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को भारतीय नीतिशास्त्र, नैतिक मूल्यों एवं जीवन-व्यवहार की शिक्षा प्रदान करता है। चाणक्य नीति के माध्यम से विद्यार्थियों को व्यावहारिक ज्ञान, अनुशासन, स्वास्थ्य, सदाचार तथा सामाजिक व्यवहार के सिद्धांतों का परिचय प्राप्त होगा। साथ ही तैत्तिरीयोपनिषद् के "अनुशासनम्" भाग के अध्ययन द्वारा वैदिक जीवन-दर्शन एवं आचार-चिंतन की समझ विकसित होगी।

अधिगम उद्देश्य:-

- विद्यार्थियों को चाणक्य नीति के नैतिक एवं व्यावहारिक सिद्धांतों से परिचय।
- विद्यार्थियों में अनुशासन, सदाचार एवं जीवन-मूल्यों के प्रति जागरूकता।
- भारतीय नीतिशास्त्र एवं वैदिक चिंतन की मूल अवधारणाओं का ज्ञान।

<u>पाठ्यक्रम :</u>

इकाई 1 चाणक्य नीति (प्रथम अध्याय)

इकाई 2 चाणक्य नीति (द्वितीय अध्याय)

संदर्भ ग्रंथ सूची :

- चाणक्य। (2020). *चाणक्य नीति*। गोरखपुर: गीता प्रेस।
- चाणक्य। (2018). *चाणक्य नीति दर्पण*। नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन।
- शर्मा, रामावतार। (2015). *चाणक्य नीति : व्याख्या एवं विश्लेषण*। वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत सीरीज।
- शास्त्री, श्रीनिवास। (2017). *चाणक्य नीति संग्रह*। दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।
- मिश्र, कपिलदेव। (2016). *चाणक्य के नीति-सूत्र*। प्रयागराज: हिन्दी साहित्य सम्मेलन।
- विद्यालंकार, सत्यकेतु। (2014). *भारतीय नीति परंपरा*। नई दिल्ली: राजपाल एण्ड सन्स।
- उपाध्याय, बलदेव। (2012). *संस्कृत साहित्य का इतिहास*। वाराणसी: शारदा निकेतन।

अधिगम उपलब्धियाँ

पाठ्यक्रम पूर्ण होने पर विद्यार्थी–

- चाणक्य नीति में वर्णित नैतिक एवं व्यावहारिक जीवन-मूल्यों को समझ सकेंगे।
- अनुशासन, स्वास्थ्य एवं सदाचार संबंधी शिक्षाओं का व्यावहारिक जीवन में प्रयोग कर सकेंगे।
- संस्कृत श्लोकों का अर्थ एवं व्याख्या करने में सक्षम होंगे।
- वैदिक उपनिषद् परंपरा एवं भारतीय नीतिशास्त्र का सामान्य ज्ञान प्राप्त करेंगे।
- भारतीय संस्कृति एवं नैतिक चिंतन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करेंगे।

दिशा -निर्देश :

- सभी इकाइयों से पांच वस्तुनिष्ठ प्रश्न अनिवार्य है -10
- इकाई 1 से 4 श्लोकों में से 2 की सप्रसंग व्याख्या - 10
- इकाई 2 से 4 श्लोकों में से दो की सप्रसंग व्याख्या -10
- इकाई 1 और 2 से 2 में से 1 आलोचनात्मक प्रश्न - 5